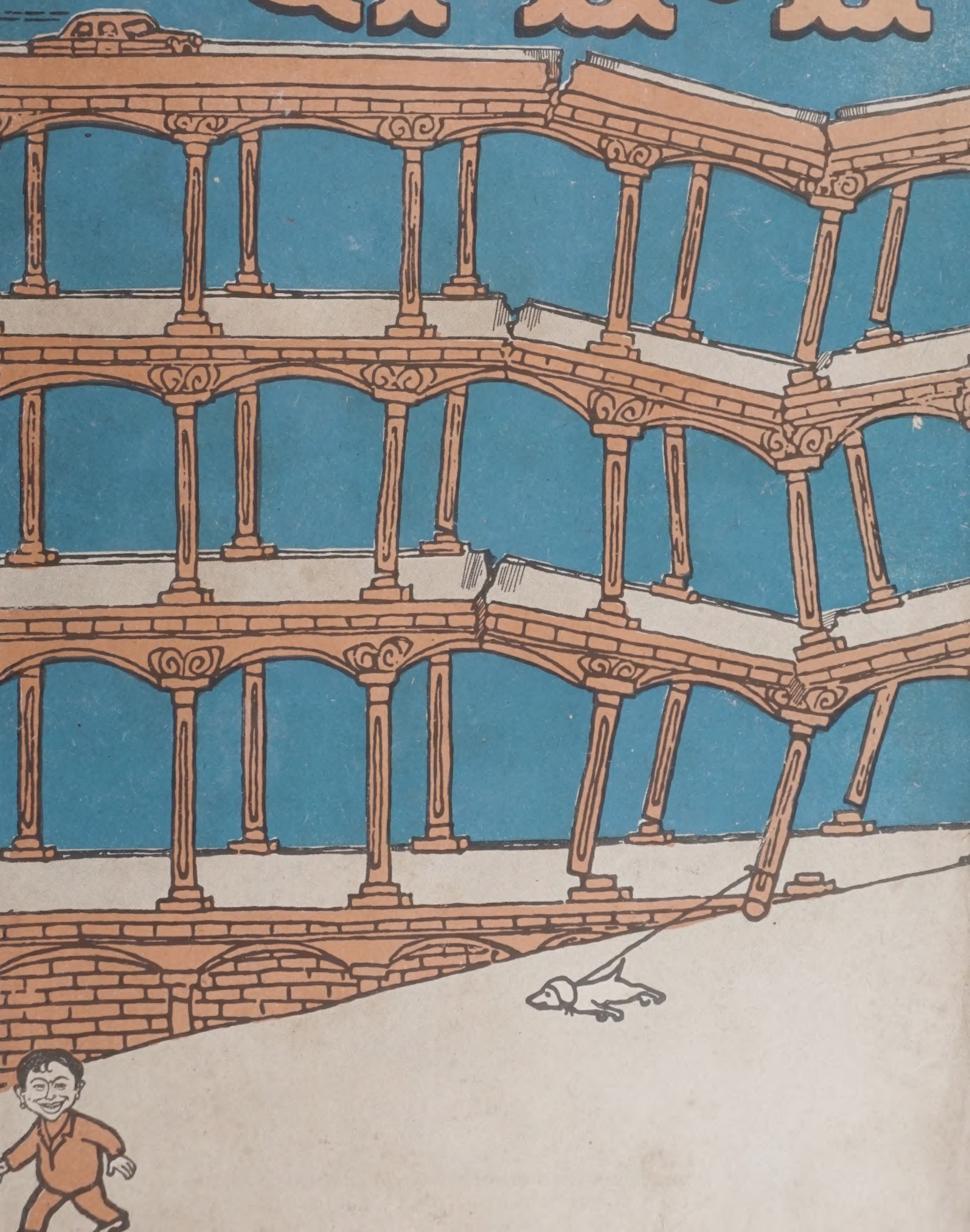
5—80

तेज साप्ताहिक मनोरंजन टैक्स १ रुपया

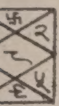
दीवाना





शिक्षा: चौकसी और परिश्रम आजादी की कीमत है जो यह कीमत अदा नहीं कर सकता है वह सदा गुलाम ही बना र

साप्ताहिक भविष्य



पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : कारोबार मध्यम, व्यय अधिक, लाभ देर से मिलेगा, अच्छे लोगों की संगति रहेगी, अचानक वैर विरोध से परेशानी, परिश्रम सफल, दौड़ धूप काफी करनी पड़ेगी, काम बन जायेंगे, देर से रुका काम बन जावेगा।

वृष : कामकाज का बोझ ज्यादा रहेगा, नातेदारों से परेशानी, आय यथार्थ, कारोबार को सुधारने के लिए योजनाओं पर विचार, यात्रा के प्रयासों में सफलता मिलेगी, दौड़-धूप काफी रहेगी।

मिथुन : व्यापार में उन्नति, लाभ भी अच्छा होगा, यात्रा की आशा है, सेहत को संभाल कर रखें, समस्यायें काफी बढ़ जायेंगी, आर्थिक परेशानी पैदा होगी, यात्रा छोड़ दें, भाईयों से सहयोग, मिले-जुले हालात चलेंगे।

कर्क : आर्थिक लाभ अच्छा परन्तु व्यय भी कम न होगा, सहयोगी संग-संग रहेंगे, हालात सुधरेंगे, परिश्रम से काम बन जायेंगे, कोई निकट सम्बन्धी या दोस्त मदद करेगा, कारोबारी कामों में परेशानी।

सिंह : सुस्ती आदि का प्रभाव रहेगा, काम भी देरी से बनेंगे या अधूरे रह जायेंगे, यात्रा छोड़ दें, व्यापार में उतार-चढ़ाव, घरेलू योजनाओं में परिवर्तन करना पड़ सकता है, आय में वृद्धि, स्थायी समस्यायें चलती रहेंगी।

कन्या : घरेलू सुख में बाधायें, यात्रा की आशा है, नातेदारों से मेल-जोल, धार्मिक कामों में रुचि एवं व्यय, सेहत को संभाले रखें, यात्रा न करें तो अच्छा है, नई योजना लाभप्रद रहेगी।

तुला : संघर्ष पूर्ण हालात का सामना, काम बनते रहेंगे, व्यय भी काफी होगा, लाभ समय पर मिलता रहेगा, काम भी देर से या रुक कर पूरे होंगे, किसी नजदीकी दोस्त या नातेदार से परेशानी।

वृश्चिक : व्यापार से यथार्थ लाभ, क्रोध या जल्दबाजी से काम न लें वर्ना काम भी बिगड़ सकते हैं, योजना के साथ व्यापार बढ़ेगा, मनोरंजन पर व्यय, रुकावट दूर होंगी, मनोरंजन आदि पर व्यय।

धनु : सुस्ती आदि का प्रभाव रहेगा, काम काज में रुचि कम, विशेष काम भी अधूरे रह जायेंगे, क्रोध बिना कारण ही रहेगा, यात्रा हो सकती है, नई योजना पर विचार, कारोबार बढ़ेगा।

मकर : हालात धीरे-धीरे सुधरेंगे, प्रयास करने पर काम बन जायेंगे, कारोबार अच्छा चलेगा, कोई महत्वपूर्ण काम बन जावेगा, शुभ सूचना मिलेगी, यात्रा भी हो सकती है, हालात प्रगति की ओर बढ़ेंगे।

कुम्भ : दौड़ धूप अधिक रहेगी, घरेलू योजनाओं पर व्यय, समय सानन्द व्यतीत होगा, यात्रा सफल, काम काज बढ़ेगा, धार्मिक कामों में रुचि, व्यय यथार्थ, नातेदारों से मेलजोल, परिवार से सुख।

मीन : धन लाभ होकर खर्चा होगा, परिश्रम से सफलता मिलेगी, राजकाज में विजय पायेंगे, लाभ, खर्च बराबर होंगे, मानसिक चिन्तायें अधिक रहेंगी, कोई शुभ सन्देश मिल सकता है, चालू कार्यों से लाभ।

आपके पत्र

दीवाना पत्रिका का मैं भी एक पाठक हूँ। दीवाना पत्रिका हर पाठक का स्वस्थ मनोरंजन तो करती है, साथ ही शिक्षा प्रद ज्ञान-विज्ञान की सामग्री से तथा खेल कूद के स्तम्भ से हम पाठकों के ज्ञान में भी वृद्धि करती है।

'अनहोनी' धारावाहिक किश्त ७ के बाद आगामी अंक का बेसब्री से इंतजार है। परन्तु कुछ दिनों से यह पत्रिका काफी देर से हमें प्राप्त होती हैं। जिसके कारण सारा मजा 'धारावाहिक कहानियों' का चला जाता है। **श्याम बाजपेयी 'जख्मी'—मण्डला**

दीवाना का अंक २ और ३ पढ़ा ये दोनों अंक मनोरंजन की सामग्री से भरपूर थे। अंक दो में 'पंचतंत्र', 'काका के कारतूस', 'राजनीतिक पार्टियों के रंगारग विज्ञापन' अच्छे लगे। हसन जमाल की हास्य व्यंग्य कहानी 'किस्सा हजार रुपये का' अच्छी लगी। इनके अलावा 'पाक क्रिकेटरों के व्यंग्य चित्र' अच्छे लगे।

अंक तीन में दीवाना पैरोडी खेल खिलाड़ी मोटू-पतलू', चुनावों में पिटे हुए नेता क्या करें एवं खेल खेल में, पीनट्स चिल्ली ब्राउन, अच्छी लगी। अशोक कुमार त्यागी की हास्य कविता 'सांत्वना' तथा विजयदत्त शर्मा की कहानी 'अण्डे का चक्कर' अच्छी लगी।

मेरे भाई गुड्डू सिंह लाम्बा का दीवाना ..ड्स क्लब में फरवरी १९७२ में फोटो छपा था, क्या इतना पुराना अंक मिल सकता है।

सुरजीत सिंह लाम्बा—फरीदाबाद टाऊन

इतना पुराना अंक मिलना असम्भव है।
—सं०

'दीवाना' मेरी प्रिय पत्रिका है। नया अंक प्राप्त हुआ। इसमें प्रकाशित धारावाहिक उपन्यास 'अनहोनी' काफी पसन्द आया। मोटू पतलू, सिलबिल-पिलपिल तथा बन्द करो बकवास बहुत अच्छा लगा। 'दीवाना चुनाव प्राइमर' ने तो हँसा-हँसा कर दीवाना कर दिया। इसके प्रत्येक अंक की बेसब्री से प्रतीक्षा करता हूं। आशा है कि होली अंक काफी मजेदार होगा। अगले अंक की प्रतीक्षा में।

धर्मेन्द्र सिंह—बारायल होटल, लखनऊ

'दीवाना का अंक २ काफी दिनों बाद प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ पर हास्य सम्राट चिल्ली को एक और अनोखी अदा में, होठों पर चिर-परिचित मुस्कराहट लिये देखकर मैं अपनी हंसी न रोक सका।

इस अंक में 'परोपकारी' जैसा स्थायी स्तंभ न देखकर जहाँ दुख हुआ वहीं पाक-क्रिकेटरों के व्यंग्य चित्र देख कर प्रसन्नता हुई। काका के कारतूस, मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल, सवाल यह है, बेहद पसंद आये। **उमेश ज्ञानचंदानी 'प्रेमी'—नागपुर**

१ फरवरी का अंक मिला।

'जहीर को अब बस' की हिदायत देता हुआ आपका मुख पृष्ठ इस कदर अपनी ओर खींच रहा था मुझे जैसे कि मुझमें वह मैग्नेट समाया हुआ हो जिसकी कि मुखपृष्ठ के चुम्बक को सदियों से तलाश हो। खैर··· खींच लिया गया मैं ! वाकई चुम्बक प्रभावशाली था।'

सवाल यह है कि···इस अंक का सबसे प्रभावपूर्ण व मनोरंजक फीचर कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। बधाई !

याद सुगन्ध —रिवाड़ी-१

दीवाना का मुझे दूसरा अंक मिला। 'डॉग शो' मोटू पतलू अच्छा लगा और अन्य लेख भी रोचक थे। मैं अपने सवाल का जवाब पाकर बहुत खुश हुआ।

लखमी चन्द माघरानी—मैहर

दीवाना का अंक १ मिला। इसमें कहानी, काका के कारतूस, चाचा बातूनी, सिलबिल-पिलपिल पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता हुई। यह अंक बहुत ही मनोरंजक था। दीवाना एक बहुत ही ज्ञान-वर्धक और हास्य पत्रिका है। अगले अंक की प्रतीक्षा में।

प्रदीप कुमार—वाराणसी

मुख पृष्ठ पर

मानो या न मानो भय्या
बात है बिल्कुल सच्ची,
चार मंजिला पुल बना
दीवारें उसकी कच्ची।
टैस्टिंग के लिए चिल्ली ने
पिल्ले को बांधा नीचे,
देखने वाला दृश्य था
जब जब पिल्ला खींचे॥

अंक : ५ वर्ष १६
१५ मार्च १९८०

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे की दरें वार्षिकः ४८ रु०
छमाहीः २५ रु० द्विवार्षिकः ९५ रु०

पाक क्रिकेट टीम क्यों हारी

एक दीवाना विश्लेषण



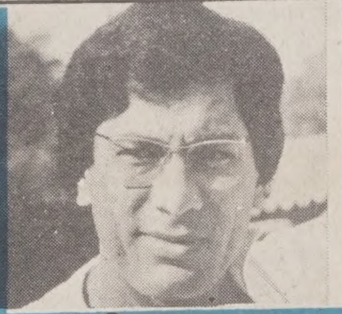
इमरान खान

लड़कियों को ओटोग्राफ देते-देते इमरान की कमर बल खा गई और वह पूरी तरह गेंदबाजी न कर सका।



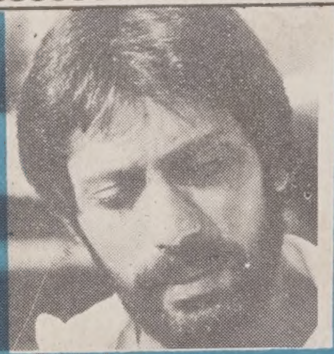
सादिक

सादिक प्रसिद्ध मुहम्मद बन्धुओं में [illegible] छो
है। अतः स्कोर भी उन्होंने यही साबित क
के लिये छोटा किया।



जहीर अब्बास

भारत में हर चीज राशन, कोटा व परमिट के हिसाब से मिलती है। जहीर के रनों का कोटा १९७७-७८ के भारत-पाक सीरीज में ही पूरा हो गया था।



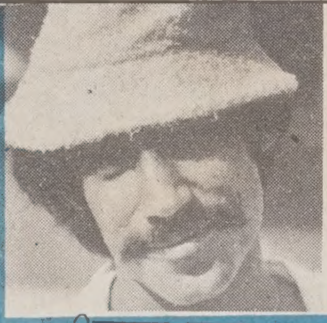
वसीम राजा

पाकिस्तान जीत जाता तो उनको दाढ़ी कटवानी पड़ती। उनकी दाढ़ी अभी कटना नहीं चाहती थी।



आसिफ इकबाल

बम्बई की भेल पूरी और मद्रास की इडल
ने पेट में अफारा पैदा कर दिया। गैस क
निकासी के लिए अम्पायर व पिचों को दो
देना जरूरी था।



मुदस्सर नजर

मदस्सर नजर ने पाकिस्तान की ओर से एकमात्र शतक बनाया। वह ज्यादा बनाकर अपने से सीनियर खिलाड़ियों को शर्मिन्दा नहीं करना चाहते थे।



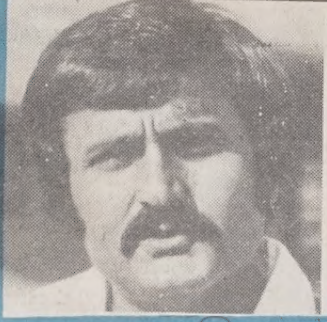
माजिद खान

माजिद इतिहास के विद्यार्थी हैं, वह मुगलोंका पतन अध्याय दोहराना चाहते थे।



जावेद मियाँदाद

जावेद ने भारत आने पर जोकरों का
व्यवहार करना शुरू किया। राजनाराय
के दिखाये रास्ते पर चलने वाले कभी जी
सकते हैं?



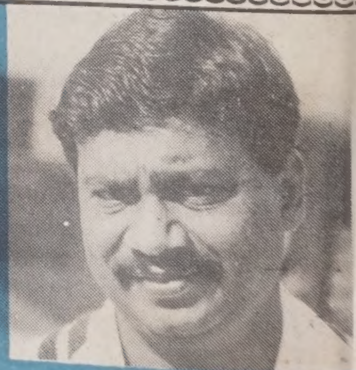
इकबाल कासिम

वह स्पिन गेंदबाजी से पाकिस्तान को जिता कर यह नहीं चाहते थे कि भारत दोबारा बेदी, चन्द्रशेखर और प्रसन्ना को रिटायरमेंट से घसीट कर ले आये।



सिकन्दर बख्त

सिकन्दर बख्त ने वही किया जो सिकन्दर ने पोरु के साथ किया था। जीतने के बाद रबर लौटा दिया।

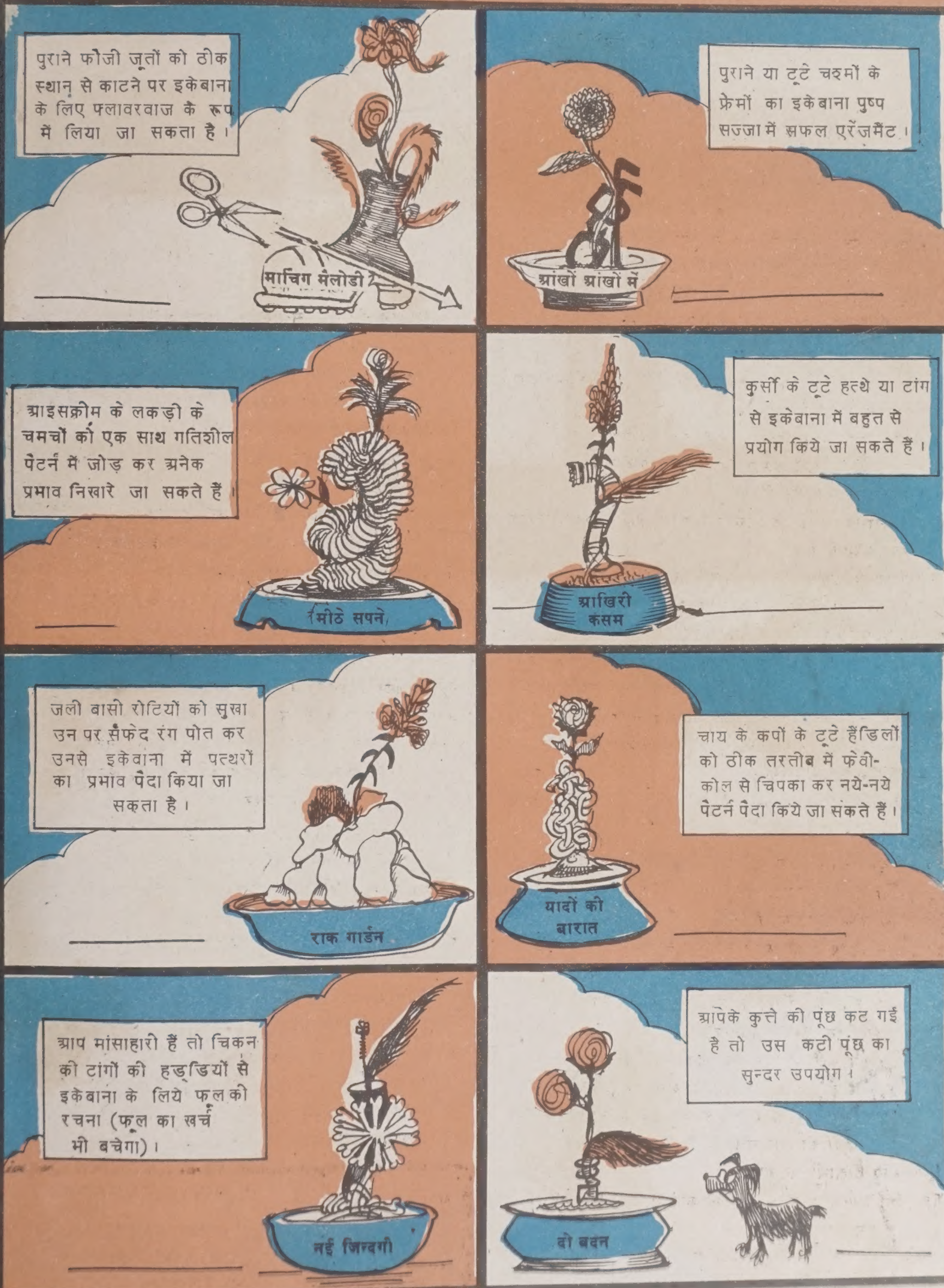


एहतशामुद्दीन

एहतशाम पहली ही टेस्ट सीरीज जी
नहीं चाहते थे। क्योंकि कहावत है प
जीत मंगावे भीख।

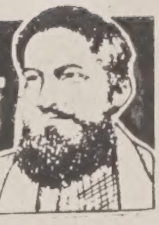
घर की फालतू चीजों का इकेबाना में प्रयोग

घर की टूटी-फूटी फालतू चीजों का इकेबाना में सुन्दर उपयोग किया जा सकता है। यहां कुछ उदाहरण पेश हैं। बस इकेबाना रूप सजाने के लिए आकर्षक शीर्षक खोजने भर की देर है। आप शीर्षक खोजने में स्वयं को असमर्थ पायें तो कोई बात नहीं, किसी फिल्म का नाम भी चलेगा।



काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के



परमजीत सिंह मुलेंच, करनाल

प्र० : आज वे कहते हैं घबरा के कि मर जायेंगे,
नैन मर के भी न पाया तो किधर जायेंगे ?

उ० : कुर्सी के लालची हैं, क्यू में लगे रहेंगे,
अगले चुनाव आयें, तब तक नहीं मरेंगे।

राजीव ढल 'मिक्की', मुरादाबाद

प्र० : काका-काकी दोउ खड़े, काके लागूँ पाँव ?

उ० : इन्दिरा शासन में हुई, काकी जी बलवान,
पाँव उन्हीं के लागिए, मिले मान-सम्मान।

वजीर अख्तर हैदरी 'दीवाना', बुलन्दशहर

प्र० : सुना है पिछले जन्म में आप धोबी थे ?

उ० : दिल्ली के ही पास था, छोटा-सा देहात,
आप हमारे गधे थे, हम धोबी विख्यात।

सुरेश खुराना पप्पी, जीन्द (हरियाणा)

प्र० : प्रेमिका के पिता और भगवान दोनों मेरे सामने हों तो मुझे क्या करना चाहिए ?

उ० : मांग लेउ भगवान से, तुम ऐसा वरदान,
यह बेटी वाला मुझे, करदे कन्यादान।

नरेश कुमार गुलाटी, दिल्ली

प्र० : कर्त्तव्य और प्यार के बीच दोराहे पर खड़े हों तो कौन-सा रास्ता अपनायें ?

उ० : किस पचड़े में पड़ रहे, यार नरेश कुमार,
कर्त्तव्य जायें भाड़ में, करो धड़ाधड़ प्यार।

मोहन मिश्रा, सिलीगुड़ी (दार्जिलिंग)

प्र० : पढ़के लव लैटर्स काका काकी के, उमड़ रहा है प्यार,
सोच रहा हूं क्या दूं, काकी को उपहार ?

उ० : मन को भाये आपके, उनके लव लैटर्स,
दस माड़ी उपहार में, भेज देउ मिस्टर्र।

महेश धर्मानी 'डब्बू', रायपुर

प्र० : काकाजी कोई उपाय बताइयें आप, धुल जायें मन के सारे पाप।

उ० : नित्य नियम से बाँचिये, पुस्तक काका छाप,
लगें ठहाके हास्य के, धुलें पाप संताप।

केवल प्रकाश अरोड़ा, काशीपुर

प्र० : हुस्न का जादू कब असर नहीं करता ?

उ० : एक आँख में स्वार्थ हो, एक आंख में प्यार,
कुछ दिन में ही हुस्न वह, हो जाता बेकार।

योगेश संघवी जैन, बेरमो (बिहार)

प्र० : भँवरा फूल के पास, ग्राहक दुकान के पास जाते हैं तो दिल वाली के पास दिल वाले क्यों नहीं जाते ?

उ० : सुघड़ सुरतिया होय तो, आशिक शीश नवायँ,
दिल वालों की क्या चले, मिल वाले मडरायँ।

मुन्ना बाबू विद्यार्थी, कानपुर

प्र० : मैंने आपके पास ६-७ पोस्ट कार्ड डाले, उत्तर नहीं मिला, क्या मुझसे दुश्मनी है ?

उ० : बिना प्रश्न के भेजते, मुन्ना बाबू कार्ड,
कार्ड आपके हो गए, सारे टाइम बार्ड।

मोहम्मद जहांगीर रांची (बिहार)

प्र० : क्या आप आसमान के तारे गिनकर बता सकते हैं ?

उ० : जिस विरहिन ने बिताई, तारे गिन-गिन रात,
प्रश्न उसी से पूछिये, बतलादे सब बात।

चंद्रभान अनाड़ी, जबलपुर

प्र० : गोरी और खूबसूरत शक्लें घमंडी क्यों होती हैं ?

उ० : 'चन्द्रभान' अस कोउ जग नाहीं, पाकर हुस्न जाहि मद नाहीं।

ध्रुवकुमार बस्नेत, नेपाल

प्र० : कभी-कभी दोस्त भी दुश्मन क्यों बन जाते हैं ?

उ० : अपने स्वास्थ के लिए करते थे जब प्यार,
मतलब पूरा हो गया, करने लगे प्रहार।

राकेश कुमार ओबेराय, जगाधरी (पंजाब)

प्र० : अमेरिका वाले स्कायलैब एवं विगत सूर्य ग्रहण पर आ विचार ?

उ० : स्कायलैब से गिर गई, जनता की सरकार,
ग्रहण कर रहीं ग्रहण का, असर राज्य सरकार।

डा० सतीश चंद्र जैन, सुदर्शो, जवेरा (म० प्र०)

प्र० : प्रेमिका की काली जुल्फों पर कुछ कहिए काकाजी ?

उ० : आप किस गम में बैठे हैं, जरा यह काम कर दीजे,
उनकी जुल्फों को लहरा कर, सुबह से शाम कर दीजे।

विजय कुमार, राजेंद्र नगर, नई दिल्ली

प्र० : कोई हसीना घास न डाले और हम डलवाना चाहें क्या करें ?

उ० : वह बेसुरी हो तो भी सुरीली बताइये,
फिर चूमिये कदम, अदब से हिनहिनाइये।

नीलम कुमारी, भागलपुर (बिहार)

प्र० : आपने बचपन के दिनों में किसी से प्यार किया था क्या

उ० : शुद्ध प्रेम था उन दिनों, कपट रहित व्यवहार,
भैया, भाभी, बहन से, करते थे हम प्यार।

रवि भाटिया, शंकर मार्किट, दिल्ली

प्र० : पति अपनी पत्नी पर शक कब करने लगता है ?

उ० : औरों से हँस-हँस मिले, पति पर आँख नटेर,
शक्की पति, उस नारि से लेना है मुँह फेर।

सुरेश कुमार बुधवानी, रायपुर

प्र० : अगर पति-पत्नी गाड़ी के दो पहिये हैं तो बच्चे ?

उ० : उत्तर हमारा सुनकर, दिल को तसल्ली दीजे,
नट-बोल्ट और इस्क्रू, बच्चों को समझ लीजे।

इन्द्रजीत सिंह समरा, बेरमा (बिहार)

प्र० : काकाजी आप काकी के बारे में भी कभी कुछ दिया करें ?

उ० : फिल्मों की तारिका और, टाकी से प्यार तुमको,
सबको धता बता कर, काकी से प्यार हमको।

धर्मेन्द्र चौधरी, खरगोन (म० प्र०)

प्र० : आप किस विषय में भाग्यशाली हैं ?

उ० : नहीं दिखाते कुण्डली, नहीं दिखाते हाथ,
हास्य व्यंग्य के रंग में, भाग्य दे रहा साथ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।	**काका के कारतूस** दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

मोटू पतलू

पिछले दिनों घसीटा राम ने नागद्वीप के जंगली लोगों से यारी करके उन्हें बली चढ़ने के लिए तीन आदमी देने का वायदा किया था और एक फिलम में काम दिलाने का झांसा देकर वह मोटू, डाक्टर झटका और चेला राम को नागद्वीप ले गया था। वहाँ जंगली लोगों का सरदार बनकर घसीटा राम ने मोटू और डा० झटका को तो पकड़वा दिया था, पर चेलाराम उनके चंगुल से निकल भागा था।

इसके बाद चेलाराम की भेंट पानी के एक जहाज के कुछ कर्मचारियों से हुई थी। उनकी सहायता से वह मोटू और डा० झटका को बचाना चाहता था। पर उसे पता नहीं था कि जिन लोगों से वह सहायता मांग रहा है वे स्मग्लरों के एक बहुत बड़े गैंग के सदस्य हैं। मोटू और पतलू को बचाने की बजाय वे नागद्वीप के मन्दिर से हीरे लूटना चाहते थे। नागद्वीप पहुंचकर एक स्मग्लर ने चेलाराम को अपने काबू में कर लिया और तीन स्मग्लर मन्दिर के खजाने में पहुंच गए जहाँ एक स्मग्लर को जंगली लोगों ने भाले से मार दिया और स्मग्लरों ने अपनी राईफलों से फायरिंग करके मंदिर में नाग देवता की मूर्ति को तोड़ दिया।

एक जासूस को स्मग्लरों की हरकतों पर शक था। वह उनका पीछा करता हुआ नागद्वीप पहुंच गया था। और उसने चेलाराम को काबू में करने वाले स्मग्लर को मार गिराया था···इसके बाद की कहानी आगे प्रस्तुत है।





दूसरी ओर स्मग्लरों ने अब तक नाग देवता की मूर्ति को तोड़ने के बाद हीरों की पोटलियां बांध ली थीं। उनकी आटोमैटिक राईफलों ने आग उगल कर और गोलियों की धूआंधार बौछार करके नरभक्षी जंगलियों को डरा कर वहां से भगा दिया था।
पर अब भी वे मंदिर के सामने के जंगल में पहाड़ी पत्थरों की ओट में छुपे हुए थे।
और जब भी स्मग्लर मन्दिर के दरवाजे से झांकने की कोशिश करते थे, पत्थरों के पीछे से उन पर बर्छों और भालों की बारिश शुरू हो जाती थी।
मन्दिर का यही एक दरवाजा था। कहीं और से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था। जंगली लोगों के भालों के सामने अब उनकी आटोमैटिक राईफलों का कोई महत्व नहीं था। उनकी गोलियों की बौछार पत्थरों के पीछे छुपे नर भक्षियों का कुछ नहीं बिगाड़ सकती थी।
क्या करें? बाहर निकल कर चाहे हम कितना भी तेज भागने की कोशिश करें। हम उनके भालों से नहीं बच सकते।
और यहीं छुपे रहें तो आखिर कब तक, कुछ ही दिनों में हम भूखे मर जायेंगे।
अगर जान बच सकती है, तो दरवाजे से बाहर निकल कर तेजी से भागने से।
हां, एक…दो…तीन कहो और मन्दिर के दरवाजे से बाहर कूद कर उधर भाग लो, जिधर से हम यहां आये थे।
और उन्होंने ऐसा ही किया। एक……दो तीन कहा और वहां से भाग खड़े हुये।
और इसके साथ ही उन पर भालों की बारिश शुरू हो गई।


अब वे आगे-आगे थे ; और जंगली लोग उनके पीछे-पीछे ।
और तेज़ भागो
जो मुसीबत पीछे है वही आगे भी है ।
आगे वालों को गोलियों से उड़ाते चलो ।
जिस खूनखराबे का खतरा था, वही हुआ । स्मग्लरों का एक साथी मरा था और एक जंगली आदमी । और पत्थरों पर कूदते और अपनी जान बचाते स्मग्लर द्वीप के किनारे खड़े अपने स्टीमर की ओर भाग रहे थे ।
भागो ! और तेज़ भागो
और वहीं मौजूद थे चेलाराम और वह डिटैक्टिव जिस ने स्मग्लरों ने एक साथी को पकड़ा था ।
वह आ रहे हैं!
यहीं कहीं छुप जाओ
लगता है, वे हीरे चुराने में सफल हो गये हैं ।
हां, द्वीप के जंगली लोग उनके पीछे लगे हैं ।
आने दो इन करलों को और पास
जैसे ही वे पास आयें, उन पर झपट पड़ना ।
हां, सांस रोके पड़े रहो ।
बोलो मत
बड़ा अजीब चक्कर है । स्मग्लर और नरभक्षी एक दूसरे के दुशमन हैं । और उन दोनों में से हमारा मित्र कोई भी नहीं है ।
कुछ भी हो हमने द्वीप के लोगों को उनके हीरे वापस दिला दिये तो उनका गुस्सा शांत हो जाएगा ।
तुम—? क्या मतलब है तुम्हारा ?



यह मतलब है हमारा ।
आह ! मार दिया ।
आह !
अब तक स्मग्लर पूरी तरह उनके काबू में थे ।
उसी समय नरभक्षी जंगली उनकी ओर बढ़े आ रहे थे ।
हमने उनके दुश्मन पकड़े हैं । पर हमें भी वे अपना दुश्मन समझते हैं । हम उनके हाथ आ गये तो वे हममें से किसी को जीवित नहीं छोड़ेंगे ।
यही तो मैं कह रहा हूं बेवकूफों, हमें पकड़ कर तुमने गलती की है । हमें छोड़ दो और उन्हें गोलियों से भूनने के लिए आटोमैटिक गनें हमें दे दो ।
तभी वहां शिव के सुरक्षा दल का हैलिकाप्टर आ गया.
मैंने उनके हीरे उन्हें लौटा दिये हैं इसे भी वे आसमानी देवताओं का चमत्कार ही समझेंगे ।
हां । चमत्कार के असर में आकर ही हम पर भाले मारने की बजाये उन्होंने अपने भाले धरती पर फेंक दिये है ।
द्वीप के लोगों की मुसीबत तो दूर हुई पर हमारी मुसीबत का कोई हल नहीं निकला है । मोटू और डा० झटका इन लोगों की कैद में हैं । उन्हें वे देवता की बलि चढ़ा कर मार देंगे ।
उनकी जान बचाने की भी कोई तरकीब सोचेंगे । इस समय तो हमारा यहां टिकना खतरनाक था ।
द्वीप के लोगों ने शायद हैलिकाप्टर को आसमानी देवताओं का चमत्कार समझा है । वे हैलीकाप्टर के सामने झुक गये हैं। अब इन लुटेरे शैतानों को साथ लो और जान बचा कर यहां से भाग लो ।


तभी उनका हैलीकाप्टर किले की मीनार के पास से गुजरा। चेलाराम दूरबीन के द्वारा मीनार के अन्दर का दृश्य देखकर दंग रह गया।
अरे यह क्या है मीनार के अन्दर, जरा देखना इन्स्पैक्टर, लगता है यहां कोई कैद है।
हाँ। कोई लड़की है। वेशभूषा से लगती है, यहाँ की महारानी है।
चलो उसकी सहायता करो।
हैलीकाप्टर अब किले की छत पर बहुत नीचे आ गया था और चेलाराम उसकी सीढ़ी के सहारे नीचे उतर रहा था।
चेलाराम मीनार के दरवाजे पर पहुंचा तो वहाँ एक पहरेदार खड़ा था।
चेलाराम ने पीछे से एक ही वार में पहरेदार का कबाड़ा कर दिया।
पहरेदार को ठिकाने लगा कर चेलाराम मीनार के अन्दर पहुंच गया।
आप कौन हैं और आपको यहाँ किसने कैद किया है?
मैं यहाँ की महारानी हूं।


मेरे महामंत्री और यहां के ओझा ने मुझे यहां कैद किया है। उन्होंने एक षडयंत्र रचकर यह घोषित कर दिया है कि मैं मर कर देवताओं के पास स्वर्ग लोक में पहुंच गई हूं। वे दोनों इस द्वीप के स्वामी बनना चाहते हैं।
स्वामी बनना क्या चाहते हैं, आपको मृतक घोषित करके अब तक तो वे स्वामी बन ही गये होंगे।
ऐसे नहीं। हमारे द्वीप के रिवाज के अनुसार पहले पूर्णमाशी के रोज तीन आदमियों की बलि चढ़ाई जाती है। तब किसी को नया स्वामी घोषित किया जाता है। और आज पूर्णमाशी है।
हे महारानी। तुम्हारे आदमियों ने हमारे दो साथियों को देवता की बलि चढ़ाने के लिए पकड़ा है। मैंने तुम्हें कैद से मुक्ति दिलाई है। क्या आप मेरे साथियों के प्राण बचाने की कृपा करेंगी
मेरी जान बचा कर तुमने मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है। मैं तुम्हारे किसी काम आ सकूं, यह मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात होगी।
मैं अपने लोगों के बीच जाकर स्वयं को जीवित घोषित करूंगी तो आदमियों की बलि देने और द्वीप का राज्य बदलने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।
आप धन्य हैं महारानी। इस मीनार से आपको नीचे ले जाने के लिए मेरे पास ऐसा वाहन है जिसे तुम्हारे लोग देवता का चम्त्कार समझेंगे। और तुम्हें देवता का वरदान।
महारानी ने वहां हैलिकाप्टर देखा तो सचमुच ही उसे आसमानी देवताओं की महिमा जान कर चौंक गईं।
महारानी को लेकर अब हैलीकाप्टर किले के दूसरी ओर चल दिया।
भगवान करे अब तक महामंत्री और ओझा ने मेरे मित्रों को बलि न चढ़ाया हो।
नहीं अभी शाम होने में देर है। पूर्णमाशी के चन्द्रमा की पहली किरण दिखाई देने पर यह बलि चढ़ाई जाती है।


दूसरी ओर मोटू और डाक्टर झटका को बलि चढ़ाने की तैयारियां पूरी की जा रही थीं और वहां का ओझा अपनी पूजा में लगा था ।
महामंत्री, रीतिरिवाज और शगुन के अनुसार हमें आज शाम तीन आदमियों की बलि चढ़ानी है और हमारे पास केवल दो आदमी हैं ।
तीसरा यह है, इसे पकड़ लो ।
मुझे पकड़ लो ? क्या मतलब है तुम्हारा ? मैं तो तुम्हारा सरदार हूं । यह दो आदमी भी बलि के लिए मैं पकड़ कर लाया था ।
हम कुछ नहीं जानते । बलि के लिए पहले हमने तुम्हें पकड़ा था । और इस शर्त पर छोड़ा था कि तुम तीन आदमी दोगे ।
मैंने तीन ही दिये थे । एक चूहे जैसे दांतों वाला लड़का तुम्हारे हाथ से भाग गया ।
पर अब तुम्हें नहीं भगाने देंगे हमें बलि के लिए तीन आदमी पूरे करने हैं ।
और इस प्रकार नागद्वीप के जंगली लोगों ने घसीटाराम को भी मोटू और डाक्टर झटका के साथ बांध दिया ।
हे भगवान, तेरे दरबार में कितना अंधेर है । मैंने जिनका भला चाहा, वही मेरे दुश्मन बने हैं ।
'तुमने केवल अपना भला चाहने के लिए हमारा बैंगन का भर्ता बनाने की स्कीम बनाई ।
अब तुम्हारा तंदूरी मुर्गा बनने लगा तो तुम्हें भगवान याद आया है ।
मेरी सेवाओं के बदले इन्होंने मुझे करोड़ों रुपये के हीरे देने का वादा किया था ।
तुम्हारे कर्म तो पांच पैसे की मूंगफलियाँ दिए जाने के योग्य भी नहीं ।
तभी वहां हैलिकाप्टर आ गया ।



आगामी अंक में देखिये और पढ़िये। मोटू-पतलू और उनके मित्रों की एक नई कहानी।

धारावाहिक उपन्यास

अनहोनी

10

लेखिका-संगीता

'लेकिन···लेकिन बेटी···आखिर वह है कौन ?''

'मेरा अपना क्लासमेंट अविनाश···मुझे आज ही पता चला है कि वह मेरा बचपन का साथी है ।'

'ओह···वैरी गुड···अब तो मैं अपनी बेटी की शादी इतनी धूमधाम से करूंगा कि सारा शहर देखेगा ।'

'डैडी—डैडी···।'

'लेकिन बेटी···' सेठ साहब एकाएक चौंककर बोले, 'तूने एक बात तो बताई नहीं ।'

'क्या डैडी ?'

'जिस प्रकार तू उसके लिए बचपन से पागल थी क्या वह भी तेरे लिए इतना ही बेचैन है ? उसके दिल में भी तेरे लिए आज तक इतना ही प्यार है ?'

'डैडी—' पद्मिनी के दिल को एक जोरदार धक्का-सा लगा ।

'बेटी···भगवान् न करे कि तेरा प्यार केवल तेरी ओर से हो।'

'नहीं-नहीं···' पद्मिनी हड़बड़ाकर कंपकंपाती आवाज में बोली, 'यह नहीं हो सकता···यह नहीं हो सकता ।'

'भगवान करे कि ऐसा न हो ।'

'वह मुझसे प्यार करता होगा···डैडी ! उसके दिल में मेरा प्यार भी जरूर होगा ।''

'भगवान करे ऐसा ही हो बेटी···भगवान करे ऐसा ही हो ।'

सेठ साहब स्नेह से पद्मिनी की पीठ थपकने लगे···उनकी आंखों में आंसू उत्तर आए थे—न जाने क्यों ?

पांच बजते-बजते पद्मिनी को अपना दिल डूबता-सा अनुभव होने लगा । जब वह कालिज से लौटी थी तो उसका दिल कहता था कि अविनाश अवश्य आएगा···वह जरूर सोचेगा कि आखिर उसकी कट्टर दुश्मन को अचानक ही उससे सहानुभूति क्यों हो गई ? अविनाश कम-से-कम उसका धन्यवाद करने तो आएगा ही···यह सोचकर पद्मिनी बेचैन हुई जा रही थी···हर गाड़ी की आवाज पर उसे यूं लगता जैसे यह अविनाश की गाड़ी हो···और जब गाड़ी के इंजन की आवाज दूर हो जाती तो पद्मिनी फिर निराश हो जाती···अब तो वह बहुत निराश हो चुकी थी···अब वह सोचने लगी थी कि शायद अविनाश अब न आए···अगर वह न आया तो पद्मिनी ही को उसके पास जाना पड़ेगा ।'

एकाएक किसी कार के इंजन की आवाज गूंजी और पद्मिनी एक बार फिर



चौंककर सीधी हो गई—फिर ऐसे लगा जैसे कार बंगले में आकर रुकी हो और पद्मिनी का दिल एकाएक धड़क उठा···वह जल्दी से उठ कर दौड़ती हुई कमरे से निकली···कोरीडोर में पहुंचते-पहुंचते उसके कानों से कालबैल की आवाज टकराई···पद्मिनी के कदम लड़खड़ा गए और उसका मन पुकार उठा—

'अविनाश···अविनाश···।'

उसकी सांसें तेज-तेज चलने लगीं और वह हांपती हुई बालकनी में पहुंची···उसने देखा नौकरानी बढ़कर दरवाजा खोल चुकी थी । पद्मिनी को लगा जैसे हजारों जलतरंग बज उठे हों···जैसे किसी ने एक साथ सितार के बहुत से तारों को छेड़ दिया हो ।

दरवाजे में अविनाश ही खड़ा हुआ नौकरानी से पूछ रहा था—

'सेठ यशवंतराय जी का बंगला यही है ना ?'

'जी हां—।' नौकरानी ने उत्तर दिया ।

'क्या पद्मिनी देवी घर पर हैं ?'

'जी हां—आईए पधारिए ।'

पद्मिनी के दिल की धड़कनें कनपटियों पर धमकने लगीं । अविनाश नौकरानी के साथ अंदर आया···नौकरानी ने उसे सोफे पर बिठाकर पूछा—

'क्या नाम है आपका ?'

'अविनाश···मैं मिस पद्मिनी का क्लासमेंट हूं ।'

इतने में अचानक सेठ साहब अपने कमरे में से निकल आए । अविनाश उन्हें देखकर जल्दी से शिष्टतापूर्वक उठ खड़ा हुआ और दोनों हाथ जोड़कर नम्रता से बोला—

'नमस्ते···!'

'जीते रहो ।' सेठ साहब ने नम्र स्वर में कहा, 'बैठ जाओ ।'

'जी—मैं जरा मिस पद्मिनी से मिलना चाहता हूं ।'

'बैठ जाओ—पद्मिनी शायद नहा रही है ।'

'अविनाश बैठ गया···पद्मिनी पिछले पर्दे की ओट में खड़ी रह गई । उसने अपने दोनों हाथ कलेजे पर रख लिए । सेठ साहब ने अविनाश को ऊपर से नीचे तक देखा और बोले—

'तुम्हारा नाम अविनाश है···तुम पद्मिनी के क्लासमेंट हो ?'

'जी हां—।'

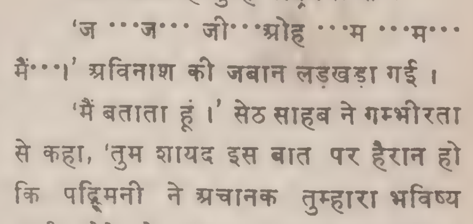
'क्या काम है तुम्हें पद्मिनी से ?'

'ज ···ज··· जी···ओह ···म ···म···मैं···।' अविनाश की जबान लड़खड़ा गई ।

'मैं बताता हूं ।' सेठ साहब ने गम्भीरता से कहा, 'तुम शायद इस बात पर हैरान हो कि पद्मिनी ने अचानक तुम्हारा भविष्य बर्बाद होने से बचाकर अपना रेस्टीकेशन क्यों करा लिया ?'

'जी—!' अविनाश हड़बड़ा गया ।

'घबराओ मत···मुझे सब कुछ मालूम



है ।' सेठ साहब ने मुस्कराकर कहा, 'पद्मिनी ने मुझे सबकुछ बता दिया है···तुम्हारी शरारत···पद्मिनी पर झूठा आरोप···फिर पद्मिनी का उल्टा आरोप···तुम्हारा रेस्टीकेशन···फिर उसका अपने अपराध को स्वीकार करना और फलस्वरूप अपना रेस्टीकेशन करा लेना ।''

'क···क··· किन्तु··· में तो केवल यह मालूम करने आया हूं कि अचानक पद्मिनी देवी ने मेरा भविष्य क्यों बचा लिया है ?'

'क्यों ? तुम्हें अच्छा नहीं लगा ?'

'जी···म···में तो उनका बहुत आभारी हूं···में तो उनका यह उपकार जीवन भर नहीं भूल सकता···मैंने अपनी शरारत का अपराध उनके सिर पर थोपकर जो भूल की थी उसके लिए क्षमा मांगना चाहता हूं··· और इसीलिए में आया था।'

'इसकी जरूरत नहीं बेटा···प्यार और युद्ध में सब कुछ उचित होता है।'

'जी—!' अबिनाश सन्नाटे में रह गया।

बेटा··· 'सेठ सहाब सोफे की पीठ से टेक लगाकर ठंडी सांस लेते हुए बोले, 'शायद तुम्हें इस बात का ज्ञान हो···हमारी बेटी पद्मिनी ने बचपन ही से अपने मस्तिष्क में अपने जीवन-साथी का एक चित्र बना रखा था···एक ऐसा साहसी, बेपरवाह, नटखट नौजवान जो किसी क्षेत्र में भी किसी से मात न खाता हो—पद्मिनी से जब हम शादी के लिए कहते थे तो उसका यही उत्तर होता था कि वह जीवन में जिससे मात खा जाएगी उसी से शादी कर लेगी।

'तुमसे उसने पहली मात कार पार्किंग में खाई, दूसरी मात मेंढक वाली शरारत में प्रोफेसर रिजवी के पीरियड में···तीसरी बार प्रिंसिपल के सामने वह तुम्हें रेस्टीकेट कराके जीतने ही वाली थी कि तुमने अपने कैरेक्टर का अनोखा पहलू दिखाकर उसे फिर हरा दिया—उसने कभी नहीं सोचा था कि तुम अपनी मां से इतना अत्याधिक प्यार करते होंगे—उसका विचार है कि जो अपने निकटतम प्रियजनों से इस प्रकार निभाना जानता हो वह अवश्य ही अच्छा पति भी बन सकता है—और बेटे, उसने यह सोचकर उसी समय अपना रेस्टीकेशन करा लिया था।'

'म···म···मगर— सेठ साहब !'

'घबराओ मत बेटे···मेरी बेटी तो यूं ही शौक के लिए पढ़ रही थी—पद्मिनी सेठ यशवंतराय की इकलौती बेटी है जो करोड़ों की दौलत की मालिक बनने वाली है···उसे इतनी उच्च शिक्षा की जरूरत भी क्या है, उसने यहां आकर अपनी इच्छा मुझ पर व्यक्त की थी और में स्वयं आजकल में तुम्हारे घर आकर तुम्हारी माताजी से मिलने वाला था।'

'जी...क···क किन्तु सेठ साहब, 'अविनाश ने झिझकते-झिझकते कहा, 'यह··· यह नहीं हो सकेगा ?'

'क्या मतलब ? सेठ साहब ने चौंककर कहा।

'जी—बात यह है कि मैं···मैं मिस पद्मिनी से शादी नहीं कर सकता।'

'लेकिन क्यों बेटे ?' सेठ साहब ने कनखियों से उसे देखकर कहा, मेरी बेटी में किस बात की कमी है···वह मेरी इकलौती बेटी है—करोड़ों की मालिक है···जो भी उससे शादी करेगा वह सातवें फेरे में ही राजा बन जायेगा।'

'सेठ साहब !' अविनाश गम्भीर होकर बोला, दौलत ही तो आदमी का सब कुछ नहीं होती···और फिर विशेषत: पुरुष के लिए··· आदमी में धैर्य और साहस हो तो वह मिट्टी से भी धन उत्पन्न कर सकता है—मैं धन-दौलत के लालच पर तो अपना सौदा कभी न करूंगा।'

'लेकिन बेटा, मेरी बेटी में और क्या कमी है ? वह लाखों में एक है—कालिज भर में उस जैसी सुन्दर कोई लड़की नहीं होगी।'



'सेठ साहब, सुन्दर वह होता है जो मन को भा जाए—जिसे मैं दिल में स्थान नहीं दे सकता वह अगर अप्सरा भी हो तो मेरे लिए व्यर्थ है।'

'अविनाश !' अचानक सेठ साहब गुस्से से बोले, 'तुम अपने उत्तर का परिणाम जानते हो ?'

'जानता हूं सेठ साहब' अविनाश फीकी-सी मुस्कराहट के साथ बोला, 'आप नगर के दो चार गिने-चुने प्रतिष्ठित सेठों में से हैं—मैं अपने जिन मामा के आश्रय में पल रहा हूं वह एक बहुत छोटी-सी फर्म चलाते हैं··· आपका और उनका कोई मुकाबला नहीं··· इसलिए आप अपने प्रभाव से अपनी बेटी का रेस्टीकेशन रुकवाकर मेरा रेस्टीकेशन भी करवा सकते हैं।'

'तो तुम्हें अपना भविष्य नष्ट करना स्वीकार है लेकिन मेरी बेटी का हाथ नहीं थामोगे ?'

'सेठ साहब ! किसी भी प्रकार का ब्लैकमेल मेरे निश्चय को नहीं बदल सकता।'

'अविनाश !' अचानक सेठ साहब गुस्से से खड़े हो गये, 'तुम जानते हो कि मैं क्या कर सकता हूं ?

'मुझे यूं छोड़कर मत जाओ निशु···मैं ही तुम्हारी मुन्नी हूं।'

'मुन्नी···!' अविनाश बुरी तरह हड़बड़ा गया।

'हां निशु···मुन्नी धीरे-धीरे सीढ़ियों की ओर बढ़ती हुई बोली, मैं तुम्हारी मुन्नी हूं··· मुझे ध्यान से देखो और पहचानो। याद करो जब हम तुम स्कूल में पढ़ा करते थे तो···तो तुम मास्टरजी की नजर चुराकर मेरे लिए आम की केरियां तोड़ने चले जाते थे···और जब मास्टरजी श्रुतलेख लिखवाते थे तो मैं अपनी तख्ती पर लिखती थी और तुम्हारी तख्ती पर भी—याद करो निशु···एक दिन मैंने तुम्हारी तख्ती पर लिख दिया था 'यह निशु का बच्चा अभी तक नहीं आया···अगर मास्टरजी को पता चल गया तो मुर्गा बना देंगे'—और निशु ! मास्टरजी ने तुम्हारी तख्ती पढ़कर सचमुच तुम्हें मुर्गा बना दिया था, और उसी दिन तुमने मास्टरजी की टोपी में मेंढक रख दिया था और···और निशु··· तुम मेरी गलती से पिटे थे इसलिए तुमने मुझसे बात करना छोड़ दिया था···।

'याद करो निशु···तुम आमों के बाग में बैठे गुलेल बना रहे थे···मैं तुम्हें मनाने के लिए आई थी और तुमने गुस्सा से अपनी कलाई पर काट लिया था क्योंकि तुम अपना

शेष पृष्ठ ५८ पर

चित्रमंच झांकी

विश्व कप फुटबाल १९७४



आपस की बातें
चचा वातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

प्रेम कुमार शर्मा—कानपुर : चाचा जी, आप कठिन से कठिन प्रश्न का उत्तर भी कैसे दे देते हैं ?

उ० : अपनी चतुराई से प्रश्न को प्रश्न के ही ताने-बाने में उलझा कर। जैसे कोई हम से पूछे, बताइये, फासफोरस पर अगर तेजाब डाला जाये तो क्या होगा ? हम उत्तर देंगे, जो फासफोरस पर तेजाब डालने से होता है।

शशि कान्त भावसार—गंजबासोदा : पाप करते समय मनुष्य भगवान को क्यों भूल जाता है ?

उ० : क्योंकि वह अपने साथ किसी को साझीदार बनाना नहीं चाहता।

कुलवन्त राय—मुरादाबाद : तकदीर मनुष्य का साथ कब छोड़ देती है ?

उ० : जब मनुष्य तदबीर का साथ छोड़ बैठता है।

चन्द्रशेखर गोस्वामी—हरिद्वार : चाचा जी, मैं महामूर्खों का एक सम्मेलन बुलाना चाहता हूं। कृपया किसी बहुत बड़े मूर्ख का पता बताइये।

उ० : आप से निवेदन है कि ऐसा प्रश्न करते समय पत्र पर अपना पूरा पता लिखना न भूलें।

मोती रोचाराम टहलवाणी—परतवाड़ा : चाचा जी, मनुष्य मरने से क्यों डरता है ?

उ० : क्यों डरता है, यह बात छोड़िये।हमारा ख्याल इससे उल्टा है, "मनुष्य डरने से मरता है।"

सुखीर सिंह—अलीगढ़ : क्या निकट भविष्य में फिर कोई "स्काईलैब" गिरने का खतरा है ?

उ० : जी नहीं, जनता पार्टी की 'देसाई लैब'



के गिरने का खतरा है हमारे नौ प्रान्तों में।

अनिल कुमार, 'मधुकर'—जवाहर नगर, दिल्ली : अच्छे प्रश्न पूछना कमाल की बात है, या अच्छे उत्तर देना ?

उ० : दोनों का अपना अपना स्थान है। जैसे एक बार रेल का सफर करते समय एक मां ने अपने बच्चे से कहा, "तुम इतनी देर से दंगा कर रहे हो, जानते हो मैंने एक थप्पड़ मार दिया तो क्या होगा ?" इस प्रश्न पर बच्चे ने उत्तर दिया, "आप बार-बार मुझे डांटे जा रही हैं। पता है मैंने टी० टी० को अपनी उम्र बता दी तो क्या होगा ?"

सुभाष कुमार केड़िया—गिरिडीह : चाचा जी, यह समचार बड़े जोर-शोर से चल रहा है कि १६८० में दुनिया समाप्त हो जायेगी। क्या यह सत्य है ?

उ० : हालात से ऐसा लगता है कि दुनिया बनाने वाला तो चाहें इसे सत्य न करे, पर दुनिया वाले इसे सत्य करने पर तुले हुए हैं।

संजय चटकारा—अमृतसर : मैंने आपकी सेवा में कुछ कार्टून भेजे थे परन्तु उनके साथ टिकट लगा लिफाफा रखना भूल गया क्या अब वह कार्टून छपेंगे ?

उ०: छपने योग्य होंगे तो अवश्य छपेंगे। इस



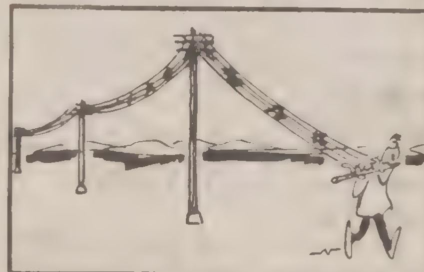
योग्य न हुए तो बिना टिकट दिल्ली से अमृतसर तक का सफर न कर सकेंगे।

बलवन्त सिंह विस्ट—पिथौरागढ़ : चाचा जी, क्या आपने कभी प्यार किया है या इससे बाल-बाल बच गये हैं।

उ० : आप हमारे सर की हालत देख कर अनुमान लगा सकते हैं कि बाल-बाल कुछ नहीं बचे हैं।

मोहन लाल शर्मा—करनाल : हर आदमी अपने को दूसरे से अधिक बुद्धिमान क्यों समझता है ?

उ० : जो ऐसा समझता है उससे बुद्धि कोसों दूर होती है। जैसे एक आदमी अपनी बुद्धि की खाट खड़ी करके नशे में धुत एक नये शहर से गुजर रहा था। उसकी डगमगाती चाल और अजीब सी हरकतों से चौंक कर गली के कुत्ते उसके पीछे हो लिये। उस आदमी ने कुत्तों को मारने के लिए एक ईंट जमीन से उठानी चाही तो वह आधी से अधिक धरती में गड़ी हुई थी। इस पर उस आदमी ने शोर मचाते हुये कहा, "हद हो गई, कितने अजीब हैं यहां के लोग! यह



बुद्धू अपने कुत्तों को तो जंजीर से बांध कर नहीं रखते। ईंटों को जंजीर से बाँध कर रखते हैं।"

अशोक जौहर, 'गगन'—देहरादून : जीवन में आपने ऐसे कौन से नेक काम किये हैं, जो आप स्वर्ग के सपने देखा करते हैं ?

उ० : जब भी मौका मिला है हमने लोगों को इस दुनिया को नर्क बनाने से रोका है।

बजरंग शर्मा—श्रीगंगानगर : प्यार कब करना चाहिए ?

उ० : जब ओखली में सर देने को मन चाहे।

सुरेन्द्र खुराना, काका—पानीपत : चाचा प्यारे, जवानी अगर कयामत है तो बुढ़ापा क्या है ?

उ० : कयामत के बाद की जवानी।

मसूद शेर खां—झांसी : यदि प्रेमिका पर किसी धमकी का असर न हो तो क्या करना चाहिये ?

उ० : उसे यह चेतावनी देनी चाहिए कि तुम्हारे वियोग में मैं अपनी जान दे दूंगा। और ऐसा करना बहुत कठिन भी नहीं है। ऐसे ही बहुत साल पहले एक प्रेमी ने अपनी प्रेमिका को धमकी दी थी कि यदि वह उसकी न हुई तो वह उसकी जुदाई में जान दे देगा और वास्तव में प्रेमिका उसकी नहीं हुई और प्रेमी ने उसकी जुदाई में अपनी जान दे दी, पर अस्सी साल की उम्र में, छः महीने तक बुखार में एड़ियां रगड़ने के बाद।

विनोद पुरी, रंजू—लुधियाना : जीवन में अच्छे क्षण कब आते हैं ?

उ० : आमतौर पर अंतिम क्षण तक भी नहीं आते।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

फैण्टम — जंगल शहर



अब मैं तुम्हें पति- पत्नी घोषित करता हूं।
एक वर्ष पहले डियाना और फैण्टम की शादी, जो राष्ट्रपति लुआगा और गुरांडा ने की थी।
क्या उनके पुत्र होगा, ?
कब ?
अब···एक वर्ष बाद···।
आह!
जिस समय फैण्टम डियाना को मिलने गया था अंकल डेव पर पार्क में हमला हुआ था
फैण्टम ने उन लुटेरों का पीछा किया जिन्होंने डेव का बैज लूटा था।
POLICE COMMAN
उसने लुटेरों का गिरोह तोड़ा और 'जंगल शहर' का पता लगाया।
FALK & BARRY 12/21
KRAK
डेली बगल
गुप्त नकाब पोश से लुटेरे परेशान।
बैज का शुक्रिया। तुमने
इसके लिए बहुत मेहनत की
हां। शहर में अपराध बहुत बड़ी समस्या है। इसे केवल यहां के लोग ही हल कर सकते हैं।
मैं जानता हूं तुम जा रहे हो, तुम डियाना से मिलोगे
अवश्य। मैं उससे मिले बिना नहीं जाऊंगा
?
डेव ने कहा तुम मुझ से मिलना चाहती हो।
हां, बहुत जरूरी बात है। मैं अभी वापिस आती हूं।
?
डियाना ने कहा कि वह बहुत जरूरी बात करना चाहती है। वह बात क्या हो सकती है डेविल ?
भौं-भों
वह आ रही है।
डियाना तुम मुझे क्या बताना चाहती हो ? मुझे घने जंगल में जाना है।
जानती हूं, मगर पहले···
···तुम बैठ जाओ।
?


अच्छा होगा कि तुम बैठ जाओ ।
अच्छा, लो मैं बैठ गया, डियाना अब बताओ, वह भेद की बात क्या है ?
कोई बड़ा भेद नहीं, छोटी सी बात है ।
प्रियतम ! हम मां-बाप बनने वाले हैं ।
!!
FALK & BARRY 12/25
डियाना, क्या हम सचमुच मां-बाप बनने वाले है ?
हां
क्या तुम्हें पक्का विश्वास है ?
हां मुझे पूर्ण विश्वास है ।
FALK & BARRY 12/26
वाह !!
?
एक नन्हा-मुन्ना ! तुम कब से इस भेद को जानती हो ?
बहुत ज्यादा दिन से नहीं । पर पक्का विश्वास होने पर ही तुम्हें बताना चाहती थी ।
FALK & BARRY 12/27
तुम ठीक तो हो ? मैंने तुम्हें उठाकर कहीं चोट तो नहीं लगा दी ?
नहीं
देखो, वहां क्या हो रहा है ।
लगता है कोई अच्छी खबर है ।
चलो मां और अंकल डेव को तुम्हारे जाने से पहले यह खबर सुना दें ।
मुझे जंगल वापस जाना है । मगर अब मैं अकेला नहीं जा सकता । दोनों कल साथ चलेंगे ।
क्यों ? क्या हुआ ?
मैं रेक्स, मोज, गुरान, मिस टांगा और लुआगा एवं गुरांडा को यह खबर देना चाहता हूं ।
FALK & BARRY 12/28
प्रिय, मगर मैं कल तुम्हारे साथ न जा सकूंगी ।
?


तुम कल मेरे साथ नहीं चल सकतीं ?
मुझे यहां बहुत सा काम खत्म करना है। मुन्ने के आने में तो अभी कई महीने हैं।
प्रिय समझने की कोशिश करो··
मुझे डा० हेनरी को बहुत पहले से छुट्टी के लिए नोटिस देना पड़ेगा
···वे बहुत खुश होंगे।
फिर जब समय पास आ जायेगा, हम दोनों साथ होंगे, मुझ पर विश्वास करो।
नाराज मत हो प्रिय। मुझे भी तुम से अलग रहकर उतना ही दुख होगा जितना कि तुम्हें
मुझे पता है कि तुम्हें तो अपने काम पर जाना ही है।
प्रिय, समझने की कोशिश करो, मुन्ने के आने के समय पर हम साथ ही होंगे।
वे दोनों इतने खुश थे अब क्या हुआ ?
यह सब क्या हो रहा है ?
डियाना तुम ठीक कहती हो, हम दोनों को अपना-अपना काम खत्म कर लेना चाहिये ?
और जब मुन्ने का समय पास होगा हम दोनों साथ होंगे।
हां प्रियतम।
मां, अंकल डेव हम आपको बताना चाहते हैं कि हम मां-बाप बनने वाले हैं।
मुन्ना ! मुझे पहले लग रहा था
बहुत खूब।
डियाना मुन्ना आयेगा, कितनी अच्छी खबर है। वह कौने वाला कमरा हम उसके लिए सजा देंगे।
अभी सब्र करो, अभी क्या जल्दी है।
डियाना का मुन्ना कहां होगा ?
डेव यह तो उसी पर निर्भर है।
फैण्टम का बच्चा हमेशा खोपड़ियों की गुफा में होता है।
मगर यह डियाना पर निर्भर है।

क्रमशः

प्रथा! अप्रैल आया

कृष्ण शंकर भटनागर

मैं चाहे और कभी मूर्ख बना हूं अथवा नहीं, यह तो अलग विषय है, पर कमबख्त अप्रैल माह अपनी मनहूस सूरत मेरे जीवन के प्रत्येक वर्ष में यूं चुपचाप आता है कि पता ही नहीं लग पाता मैं मूर्ख बन जाता हूं। ईश्वर जानता कि कई मौके ऐसे भी आये जब मेरी ती बुद्धि जीवियों में होते-होते रह गई - इसका सबसे बड़ा कारण रहा फर्स्ट ल फूल।

मैं तो नहीं समझता कि यह कोई भार- त्योहार है। अंग्रेजों ने न जाने क्या कर इसकी उत्पत्ति की थो···शायद लिए कि वर्ष में केवल एक बार किसी ष व्यक्ति को 'फूल' बनाने का उनका ार रहा होगा, परन्तु यह दुमछल्ला भारत छोड़ जाने की उनकी प्रथा का कम से हमें तो राज समझ नहीं आया। यह हया' है···जनाब यहां तो प्रतिदिन ही गों को 'अप्रैल फूल' बनना पड़ता है। ओं में मिलावट, दामों में हेराफेरी, नकली ईयां···क्या ये सब 'फूल' बनाने के लक्षण हैं? फिर ऐसे देश में 'अप्रैल फूल' ना तथा बनाना कुछ अजीब सा लगता वर्ष में तीन सौ पैंसठ दिन तो फूल बनते हैं···हां इतना महत्व अवश्य है कि इस विशेष सावधानी बरती जाती है कि कूफ ना बनें, पर फिर भी बन जाते हैं।

हमारे देश में तो कोई भी क्षेत्र ऐसा है जहां यह अप्रैल फूल वाला खेल पूरे ना खेला जाता हो। राजनीति के अखाड़ों तो यह विशेष रूप से लोकप्रिय है। राज- ति में आधुनिक इष्टदेव अपने परम हितैषी त सेवक को बीच जंगल में 'अप्रैल फूल' वापिस अपनी गद्दी से चिपक जाते हैं। कैसी प्रथा? हम कहते हैं आओ हम हैं हमें और बेवकूफ बनाओ। हम तो ार बैठे हैं।

मैं पहले ही कह चुका हूं कि इसी वाज के कारण ही हमारी गिनती बेवकूफों में होने लगी है। बचपने में भी पूरे ३६४ दिन अपने भाई-बहनों को बेवकूफ बना माल उड़ा जाता था तो कुछ नहीं···परन्तु एक दिन प्रथम अप्रैल को वे सब मिलकर मुझे बेवकूफ क्या बना देते कि स्वर्गीय पिताजी का गुस्सा बिजली बन सीधे मेरे ऊपर गिर पड़ता था—खानदान को बदनाम करने पर क्यों तुला है 'फूल'? यह बात भी कतई नहीं कि मेरे वालिद साहब कभी बेवकूफ ना बने हों। बने हैं···

कई वर्ष पहले की बात है मेरे बड़े भाई जो तब नये-नये अहमदाबाद गये थे। उन्होंने एक पत्र डाल दिया। पत्र आया और पढ़ते-पढ़ते जैसे-जैसे वालिद साहब आगे बढ़ते गये उनका 'फेस इम्प्रेशन' बताता गया कि दाल में कुछ नहीं बल्कि बहुत अधिक काला था। मेरे दोनों बड़े भाई उन दिनों अहमदाबाद ही थे। बड़ी भाभी यहीं आई हुई थीं। पिताजी ते तुरन्त भाभी को बुलाकर कहा—तुम लोग तो कहते थे कि वहां पर कोई भी ऐसी वैसी बात नहीं है। तुम लोगों की



बातों में आकर मैंने अखिलेश को वहां भेज दिया। यह देखो क्या हालत होकर रह गई है उसकी···?'

अब तो भाभी ने जो खत पढ़ा तो उनका भी बुरा हाल हो गया। लिखा था—कल रात्रि सोया हुआ था कि अचानक न जाने किन लोगों ने मुझ पर एकदम 'अटैक' कर दिया। किसी ने मुझे इधर से खन्जर मारा तो किसी ने उधर से, अंग-अंग से खून टपकने लगा। परदेसी आदमी ठहरा और दुश्मन गिनती में न जाने कितने? मेरे खून ने भी जोर मारा आखिर आपका खून जो ठहरा पिताजी, मैंने हिम्मत कर लाइट जलाई और फिर गिन-गिनकर दुश्मनों को मारने लगा। कहां तक भागते? आपको लिख देना ही ठीक समझा चाहे वे दुश्मन खटमल ही क्यों न हों···

फिर तो वास्तविकता पता लगते ही हम सब लोग खिलखिला कर हँस पड़े—एक झेंप भरी हंसी। बताइये साहब यह भी कोई बात हुई भला! आपने खत लिख दिया बस और दूसरों का जो खून सूख गया उसकी कोई चिन्ता नहीं। अब बताइये यह भी कोई बात हुई भला! कि दूसरों को तंग करके प्रसन्न हुआ जाये। हम भी साहब कोई दूध के धुले नहीं हैं···हमने भी हिमाकत की है।

उन दिनों जब हम अम्बाला में पढ़ रहे थे, न जाने क्यों हमें भी 'अप्रैल फूल' बनाने की झक सवार हो गई। एक वही साल ऐसा था जिसमें हम बेवकूफ बनने से पहले ही दूसरों को बेवकूफ बना गये थे। सारी रात्रि जागकर बिताई तब कभी जाकर 'फर्स्ट अप्रैल' की वह सुनहरी प्रातः हाथ लगी थी···जिसका हम बेताबी से इन्तजार कर रहे थे। पूरा रियाज कर लिया था। एक दिन पहले बालकनी से देखा—पड़ोसी का लड़का बाहर गया। बस शुरू हो गया हमारे नाटक का प्रथम अंक! पहले आराम से मौहल्ले की सीमा पर पहुंच वापिस मुड़े और वहां से दबाकर भागना शुरू कर दिया वापिस घर की ओर, हांफ गये थे, घबराहट के चिन्ह चेहरे पर अलग, पड़ोसी के घर में ऐसे घुसे जैसे महमूद गजनबी सोमनाथ मन्दिर में। घुसते ही पूछा—काका कहां है? अंकल कहां है? बीकू को कुछ लड़के मिलकर मार रहे हैं गली के बाहर, जल्दी चलो···

अब क्या था? उसके चारों भाई तीनों बहनें, मां-बाप सब एक ही हांक में बाहर भाग चले। भगदड़ मच गई···जिसके हाथ में जो चीज आई उठा ली···यह सारी फौज पीछे-पीछे और मैं आगे-आगे कमाण्डर बना आगे बढ़ा जा रहा था। उन्हें मौहल्ले के मौहल्ले निरर्थक ही घुमा डाले—यहीं तो थे, पता नहीं कहां चले गये?' सारा मौहल्ला इकट्ठा हो गया और बीकू को सामने आता देखा तो अपने राम ने वहां से खिसक लेने में ही भलाई समझी। बाद में तो उन लोगों को स्वयं ही पता लग चुका था कि वे सब अप्रैल फूल बन चुके थे।

यह तो कुछ भी नहीं है। 'अप्रैल फूल' की एक घटना तो ऐसी है जिसकी वीभत्सता पूरे तेरह-चौदह वर्ष बाद भी नहीं भुलाई जा सकी है। (शेष पृष्ठ ३१ पर)


सिलबिल पिलपिल और
हिममानव येति
एक पर्वतारोही दल ने येति के पांव के निशान देखे । सिक्किम के थुँगचू पहाड़ियों में येति के होने के प्रमाण मिले ।
अगर येति को कोई पकड़ सकता है तो वह थम दोनों ही हो । थमारे पास जासूसी का एक्सपीरियंस है, हिम्मत है, सूझ-बूझ है और बत्तीस दांत हैं ।
अगर यह येति भाई हमारे
लग जाता तो हमारी सेहत
जाती ।
येति म्हारे पंजे में आये तो फायदे तो बोत होंगे और कुछ नहीं तो गुड़गांवे में म्हारे डंगर ही चरा लेगा, यहां सहर में ही रहेगा तो भी ठीक है । भांडे बर्तन माँजेगा, उसको तनख्वाह भी नहीं देनी पड़ेगी ।
वह तेरी अक्ल को घास भी चरायेगा । फिटे मुंह हो थारा । थम येति से डंगर चरवाओगे ? भांडे मजवाओगे ?
अरे चूहे तू इसके मुँह क्यों लगता है ? यह तो बेवकूफ है । इसने आज तक कभी अक्ल की बात कही है ? इतने साल म्हारे साथ रहया फिर भी गंवार ही रहा । भाँडे मंजवाने और डंगर चराने की बात ही आ सकती हैं इसकी खोपड़ी में। इसको क्या पता कि येति खाने की चीज है, उसका मीट बहुत अच्छा बनता है ।
थम दोनों ही एक से बढ़ कर एक हो, थमारी बातें सुनकर मेरा दिल गम के स्वीमिंग पूल में डाइव मार जाता है । अरे मूर्खानन्दो अगर येति को थम पकड़ लोगे तो दुनिया में मशहूर हो जाओगे, बेशुमार दौलत तुम्हारे कदम चूमेगी, तुम्हारे वारे-न्यारे हो जायेंगे ।
येति दुनिया का सबसे अनोखा जीता-जागता बन मानुस है । अगर थम उसे देखने के लिये ही टिकट लगा दो तो करोड़ों रुपये टिकटों से ही मिल जायेंगे, थमारी कोठी के बाहर २४ घंटे हाऊस फूल का बोर्ड लगा रहेगा । दुनिया भर के चिड़ियाघर और साइंस दान येति के लिए तुम्हें मुंह मांगा दाम देने को तैयार होंगे । टेलीविजन कम्पनियों वाले लाखों रुपये देकर तुम्हारा इन्टरव्यू लेंगे ।
HOUSE FOOL
Rs. 500·00


अगर ऐसी बात थी तो गद्दार चूहे तूने आज तक हमें क्यों नहीं बताया ? इसके लिए तुझे मरना ही पड़ेगा । हम बेकार में लाटरी, रेस और जुये के चक्कर में पड़े रहे । पहले हमें पता होता तो कब के येति को पकड़ कर करोड़ों रुपये कमा चुके होते । मैं यह सवा मन का घन तेरे सिर पर मारूंगा ।
GNNNNNNNN!
शऽऽऽऽऽ ! बताना मत । यह चूहा इसी काबिल है । सौ टी. एन. टी. के धमाके से इसके परखचे उड़ जायेंगे । इसने आज तक हमें अंधकार में रखा ।
तू हमारा दोस्त है । इसलिए इस बार तरस खाकर हम तुझे छोड़ रहे हैं । सिर्फ यही सजा है तेरी कि एक सप्ताह तू पूंछ के सहारे इस खूंटे से इसी तरह लटकता रहेगा ।
और सीधी तरह तू येति के बारे में जो कुछ जानता है हमें बता दें । कोई गल छुपा के मत रखना । हमारा गुस्सा बोत जादा खराब सै ।
पहले तो हमको लाइब्रेरी से येति के बारे में जितनी किताबें मिलें लाकर पढ़नी हैं । और अखबार के दफ्तरों से भी येति के बारे में अखबारों में छपी खबरों की कतरनों को भी पढ़ना है ।
इससे येति के बारे में हमें पक्का पता हो जायेगा, सारे भेद खुल जायेंगे । हमें मालूम हो जायेगा कि वह किस फिल्म का फैन है । क्रिकेट के बारे में कितना जानता है ।
पुस्तकालय
भाई जी, इतनी सारी पुस्तकें क्या सचमुच ही पढ़नी पड़ेंगी ? इतनी किताबें तो हमने तब भी नहीं पढ़ी थीं जब मेरठ में चौथी जमात का इम्तहान दिया था ! इनको पढ़ते-पढ़ते तो हम बूढ़े हो जायेंगे । छः नम्बर के चश्मे चढ़ जायेंगे ।
येति को पकड़ना है तो पढ़ना ही पड़ेगा । यह किताबें बारात की घोड़ी हैं इन पर चढ़कर हमें दुल्हन येति को लाने जाना है ।
एक तरकीब तो आई है भाई जी मेरे दिमाग में । इधर आओ मेरी तरफ । कान में मैं थमको बताता दूं, जोर से बोलूंगा तो यह गद्दार चूहा सुन लेगा ।
तेरी बात में वजन तो है । लगता है हमको यही करना पड़ेगा । और कोई चारा नहीं है । तेरी बात न्यूटन के सिद्धांत पर भी खरी उतरती है ।


अरे यो क्या कर रहे हो ? तुम्हारा दिमाग तो नहीं फिर गया है ? लाइब्रेरी से लाई सारी किताबों को फाड़-फाड़कर इस भैंस को क्यों खिला रहे हो ?
मूसे तू हमको बेवकूफ समझता है न। हम तो लोगों को उल्लू बनाने के लिए बेवकूफी की एक्टिंग करते हैं। हम इतने बेवकूफ नहीं हैं जितने तू समझता है। हम यह किताबें फाड़ इसको खिला रहे हैं। पचा कर यह दूध देगी। किताबों में जो विद्या है उसका सत्त दूध में आयेगा। दूध से हम घी निकाल कर खायेंगे। घी की तरावट दिमाग में पहुंच जायेगी। जो कुछ किताबों में लिखा है वह भी अपने आप दिमाग में आ जायेगा।
हमको किताबें भी नहीं पढ़नी पड़ेंगी। और ज्ञान भी प्राप्त होगा। आम के आम गुठलियों के दाम।
बात तो थमने बोत पते की कही है। इतने पते की कि उस पर पिन कोड नम्बर भी लिखा है। लेकिन एक बात थम भूल गये कि किताबों में कई ऐसी बातें भी होती हैं जो फालतू हैं, वह भी अब अपना रंग दिखायेंगी।
कौन सी बात क्या रंग दिखायेगी ? तू कहना क्या चाहता है ?
मसलन किताबों में नक्शे भी दिये होते हैं वह भी दूध के रास्ते थमारे पेट और दिमाग में पहुंच जायेंगे। उसका असर यह होगा कि थमारे मुंह का भी भूटान का नक्शा बन जायेगा। यह इस तरह।
और किताबों में पेज नम्बर और अन्त में इंडेक्स भी होता है। वही पेज नम्बर पूंछ बनकर थमारे पीछे उग आयेगा। दुनिया में पहली बार कोई कोड नम्बर वाली पूंछ होगी।
अच्छा चलो, अब जो कुछ होना था हो गया। अब तो सिक्किम चलने की तैयारी करो। कैम्पिंग का सारा सामान तो आ गया। पर्वतारोहियों के किट भी आ गये, राशन आ गया।
हो हो।
सबसे जरूरी चीज तो तू भूल ही रहा है। एक बहुत बड़ी बोरी और रस्सा भी ले जाना है। येति को हम बोरी में बांध कर ही तो ले आयेंगे। इतनी बड़ी बोरी हमें कहां से मिलेगी ?
उसके लिए तेरी खाल ही काम आयेगी ? पिछली बार एक मकड़े ने मार - मार कर तेरी खाल में भूस्स जो भर दिया था।



सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए।

पृष्ठ १७ का शेष

गुस्सा उतारने के लिए दूसरों को तो मार सकते थे किन्तु मुझ पर तुम कभी हाथ नहीं उठाते थे और···अपना क्रोध जताने के लिए स्वयं अपनी कलाई पर जोर से काट खाते थे—मैंने तुम्हारी कलाई पर अपनी ओढ़नी फाड़कर पट्टी बांध देती थी···।

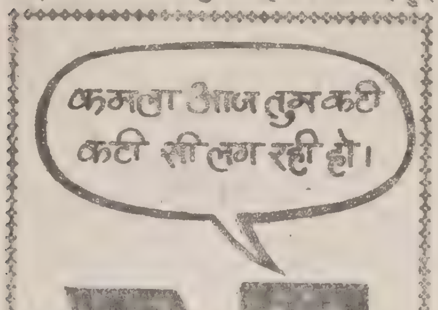
'और फिर याद करो कि निशु···उसी समय डाकू आ गये थे जो मुझे उठा ले जाना चाहते थे लेकिन तुमने केवल गुलेल की मार से उन्हें मार भगाया था और मेरी इज्जत तथा मेरे प्राण बचा लिये थे···मैं तुम्हारी वही मुन्नो हूं···।'

पद्मिनी यह कहती हुई धीरे-धीरे नीचे उतर रही थी और अविनाश खड़ा हुआ थर-थर कांप रहा था—पद्मिनी बोल रही थी और अविनाश के कल्पना-पट पर वह सारे दृश्य उभर रहे थे···पद्मिनी उसे कभी बारह बरस पहले की छोटी-सी मुन्नी दिखाई देती और कभी जवान निखरी हुई पद्मिनी···।

और फिर···पद्मिनी अविनाश के बिल्कुल सामने खड़ी हो गई और भर्राई हुई आवाज में बोली—

'मैंने तुम्हें उस समय पहचाना था अविनाश जब तुमने प्रिंसिपल के सामने अपनी मां की सौगंध का चर्चा किया था···गांव का वर्णन किया था···इसलिए मैंने तुम्हारा भविष्य बचाने के लिए अपना रेस्टीकेशन करा लिया था··· क्योंकि··· क्योंकि तुम नहीं जानते अविनाश···मैं आज तक अपने मन में किसी की मूर्ति इसलिए नहीं सजा सकी कि मेरे मन-मन्दिर के देवता तुम हो—केवल तुम—जिस मन-मन्दिर में तुम्हारी मूर्ति सजी हो भला वहां दूसरा कोई स्थान कैसे पा सकता है ?''

'हां बेटे···' सेठ साहब जो अब तक पद्मिनी की बातें सुन रहे थे; भर्राई हुई



आवाज में बोले, 'मैंने···यह नाटक इसलिए रचा था कि पद्मिनी और मैं तुम्हारी परीक्षा लेना चाहते थे कि क्या अब तुम्हारे मन में भी उसके प्रति इतना प्यार है जितना उसके मन में तुम्हारे लिए है···और तुम···तुम इस परीक्षा में पूरे उतरे हो।''

अविनाश के बदन में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई···उसके दोनों हाथ फैल गए और होठों से कंपकंपाती आवाज निकली—

'मुन्नी···मेरी मुन्नी···।

'अविनाश···मेरे अविनाश।'

और फिर दूसरे ही क्षण वह अविनाश के सीने से लगी रो रही थी···अविनाश की आंखों से भी आंसुओं की बूंदें टपक रही थीं··· सेठ साहब के नेत्र भी भीग गए थे—बड़ी मुश्किल से अविनाश ने अपने ऊपर काबू पाया और पद्मिनी के दोनों कंधे पकड़ कर बोला—

'लेकिन तुम···तुम तो ठाकुर धर्मपाल



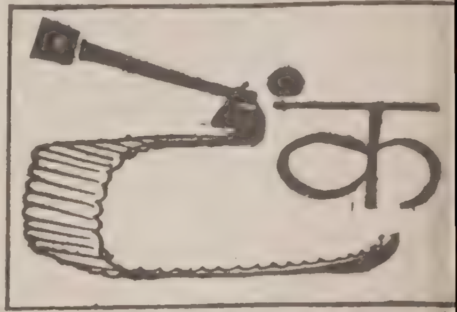
सिंह की बेटी हो—हीरापुर के ठाकुर धर्मपालसिंह।''

''हां बेटे···'' सेठ साहब ने कहा, ''यह ठाकुर धर्मपाल सिंह की बेटी थी···मुन्नी जिसका पूरा नाम 'मोना' था···लेकिन अब यह हमारी बेटी है—कैसे···? यह मैं तुम्हें बताऊंगा।''

अविनाश ध्यान सूचक दृष्टि से सेठ साहब की ओर देखने लगा।

अविनाश ध्यान पूर्वक बड़े आश्चर्य से सेठ साहब की जबानी मुन्नी की कहानी सुन रहा था और उसकी आंखें आश्चर्य से फटी हुई थीं। आखिर में सेठ साहब ने एक लम्बी गहरी सांस लेकर कहा—

'भगवान ने शायद मेरी बेटी पद्मिनी को इसलिए अपने पास बुला लिया था कि मुन्नी के भाग्य में पद्मिनी बनकर जीना लिखा हुआ था—और शायद मुन्नी के बाल पति को इसलिए छीना था कि उसे तुम्हारा और मुन्नी का मिलाप स्वीकार था···तु दोनों की रेखाओं में आपसी संजोग लिख था—कुछ भी हो···अब तो सत्य यही है कि यह हमारी बेटी पद्मिनी है···मुन्नी नहीं—और बेटा, ध्यान रखना, मेरी पत्नी शोभना



के सामने कभी यह भेद न खुलने पाए कि यह पद्मिनी नहीं मुन्नी है···।'

'आप विश्वास रखिये सेठ साहब मेरी जबान पर कभी यह भेद मां जी के सामने नहीं आएगा।'

'और बेटे—तुम मुन्नी को साथ ले जाकर अपनी मां से मिला लाओ और उनसे भी यह कह देना कि इस बात को भेद ही रखें, और उनसे यह भी कहना कि अबकी इतबार को मैं और शोभना पद्मिनी की बात पक्की करने तुम्हारे यहां आएंगे—फिर जब तुम चाहोगे हम शादी निश्चित कर देंगे।'

'जी···जैसी आपकी आज्ञा।'

'जाओ बेटी, तुम अविनाश के साथ जाकर उसकी मां से मिल आओ।'

अविनाश की कार अपने मामा के छोटे से फ्लैट के सामने पहुंचकर रुक गई···यह एक छोटा-सा बंगले सरीखा फ्लैट था जिसके सामने एक छोटा-सा लान भी था। अविनाश ने कार से उतरकर दरवाजा खोला और पद्मिनी अविनाश के साथ नीचे उतरी। दोनों दरवाजे के पास पहुंचे और अविनाश ने घंटी का बटन दबाया। कुछ देर बाद नौकर ने दरवाजा खोला—अविनाश पद्मिनी के साथ अन्दर दाखिल हो गया और इधर-उधर देखकर पुकारने लगा—

'मां···मां···।'

'साहब···।' नौकर ने कहा, 'आपकी माताजी तो मन्दिर गई हैं···थोड़ी देर बाद आती ही होंगी।'

'अच्छा···मामाजी तो नहीं आए अभी।'

'जी नहीं—अभी नहीं आए।'

ठीक है···तुम चाय तैयार करो जाओ।

नौकर किचन की ओर चला गया और अविनाश ने पद्मिनी का हाथ थामकर कहा—

'आओ—जब तक मैं तुम्हें एक सरप्राईज दूंगा।'

पद्मिनी अविनाश के साथ दूसरे कमरे

हुंची । अविनाश ने एक सोफे की ओर ा करके कहा—

'बैठो—यह मेरा और मां का कमरा

'तुम्हारे मामा क्या अकेले ही हैं ?'' मनी ने पूछा ।

'हां···जब हम लोग यहां आए थे तब ा जिन्दी थीं···फिर वह एक वबाई रोग



शिकार हो गईं—इसके बाद मामा ने ी शादी नहीं की इसलिए कि उन्हें मामी हुत प्यार था ।'

'उनकी कोई सन्तान भी नहीं थीं ?'

'एक लड़का हुआ था वह भी ऑपरेशन 'वह भी दो बरस बाद मर गया । इसके उनका कोई बच्चा नहीं हुआ—इसलिए मामा मुझे बहुत प्यार करते हैं ।'

अविनाश ने एक अलमारी खोली··· में रक्खी हुई एक छोटी-सी संदूकची ालो और उसे मेज पर रखकर खोला··· उसमें से निकलने वाली चीज को देख- पद्मिनी का शरीर हिलकर रह गया··· अविनाश ने पद्मिनी के सामने रखकर —

'पहचानती हो मुन्नी···यह क्या चीज '

'यह···यह···यह तो वह ओढ़नी की है जो मैंने तुम्हारी कलाई के घाव पर ी थी ।' मुन्नी ने कंपकंपाती आवाज में ।

'हां मुन्नी···यह वही पट्टी है—तुम्हारी नी की पट्टी—मेरे पास तुम्हारे प्यार आखिरी निशानी···इसे मैंने अपने प्राणों ी बढ़कर सुरक्षित रखा हुआ है ।'

'अविनाश···! !'

पद्मिनी की आवाज कंपकंपा गई वह कर अविनाश के कंधे से लगकर सिसक । अविनाश ने भी पद्मिनी को लिपटा ा था···उसकी आंखें भीग गईं थीं··· फिर अचानक ही पद्मिनी ने दरवाजे ास एक बूढ़ी और कंपकंपाती आवाज ।

'अविनाश···।'

अविनाश और पद्मिनी हड़बड़ाकर एक दूसरे से अलग हो गए । उन्होंने दरवाजे की ओर देखा जहां दुलारी पूजा के फूल लिए आश्चर्य से आंखें फाड़े खड़ी हुई थी । उन्होंने कंपकंपाती आवाज में कहा—

'अविनाश ! यह क्या कर रहा था तू ?'

'मां···।' अविनाश ने मुस्कराकर कहा, 'तुमने पहचाना नहीं, यह कौन है ?'

'कौन है ?' दुलारी ने कुछ तीखे स्वर में कहा और मेज पर पूजा के फूल रखकर एक बार खांस कर गुस्से से बोलीं, 'और इसे तू क्यों यहां लाया था ?'

'मां ! यह मुन्नी है मुन्नी ।'

'मुन्नी—!' दुलारी उछल पड़ी ।

'हां मां···यह मुन्नी है···मेरी स्कूल की साथी···ठाकुर धर्मपालसिंह की बेटी···मुन्नी ।'

'क्या ?' दुलारी के हाथ से छड़ी छूटकर गिर गई, 'यह···यह वह मुन्नी है ?'

'हां मां !'

पद्मिनी ने आगे बढ़कर सिर पर



आंचल करके दुलारी के पैर छूए और दूसरे ही क्षण दुलारी ने पद्मिनी को उठाकर सीने से लगा लिया । उनका पूरा बदन 'खुशी से थरथर कांप रहा था और उनकी आंखों में आंसू तैर रहे थे···सांसें तेज-तेज चलने लगी थीं ।

'मुन्नी···मेरी बेटी ।'

'मां···मां ।'

अचानक तेज सांसों के साथ मां को खांसी उठ आई । अविनाश ने जल्दी से घबराकर दुलारी को कंधों से पकड़कर बिठा दिया ।

'मां···मां···तुमसे कितनी बार कहा··· अकेली बाहर मत जाया करो ।'

'बेटे···मैं···मैं···तो तेरी ही सफलता की प्रार्थना करने गई थी···भगवान् करे अब के तू अपनी कक्षा में प्रथम आ जाए और मेरी मनोकामना पूरी हो ।'

दुलारी को फिर खांसी का दौरा उठा··· उसका गला सूख रहा था···अविनाश के होंठ भिच गए···उसने जल्दी-से कांपती आवाज में पद्मिनी से कहा—

'मुन्नी—जल्दी से मां के लिए पानी ला दो ।'

पद्मिनी जल्दी से बाहर दौड़ गई और थोड़ी देर बाद पानी का गिलास लाकर दुलारी को पानी पिलाने लगी—अविनाश होंठ भींचे खड़ा हुआ अपने आंसू रोकने का प्रयत्न करने लगा । दुलारी ने पानी पीने के बाद अविनाश के सिर पर हाथ फेरा और कांपती आवाज में बोली—

'निराश न हो मेरे लाल···शायद अब भगवान् तेरे ऊपर दयालू हो गया है—देख तो उसने तेरी बचपन की साथी को मिला दिया···अब भगवान् तुझे शिक्षा में भी कालिज में ही नहीं बल्कि प्रान्त भर में सबसे उत्तम स्थान देगा ।'

अविनाश मां की गोद में मुंह छुपाकर सिसकियां भरने लगा ।

कार सड़क पर तेजी से दौड़े जा रही थी···पद्मिनी और अविनाश जोर-जोर से ठहाके लगा रहे थे···पद्मिनी अविनाश के कंधे से लगी बैठी थी···अविनाश का एक हाथ उसकी कमर में था। दोनों के ठहाकों में भी खुशी के आंसू झलक रहे थे । आज छुट्टी का दिन था और अविनाश सवेरे-ही-सवेरे पद्मिनी के घर पहुंच गया था···तब से अविनाश और पद्मिनी सारे शहर में घूमते फिर रहे थे···कभी मैरिन ड्राईव, कभी चौपाटी, कभी मालाबार हिल और कभी वहां से सीधे जुहू ।

शेष आगामी अंक में

चित्र-वर्ग पहेली

शब्द बनाइये—नीचे बेतरतीब से दिये अक्षरों को आप ठीक क्रम में रखें तो सार्थक शब्द बनेंगे। उन्हें ठीक क्रम में साथ दिये वर्गों में भरें।

20 रुपये इनाम

न म प्र प न ने

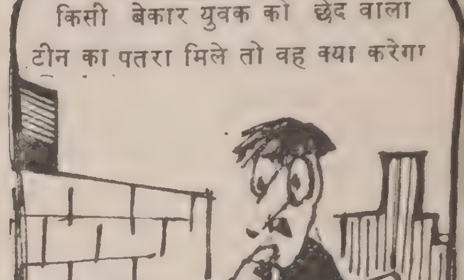
खा छा ना पा

व खा ज प

ला बु ये कु गा ल

हि रा क धा वा

अन्तिम तिथि १५ अप्रैल ८०



दायीं ओर के चित्र के सवाल का मजेदार जवाब पाने के लिए बांयी ओर भरे ▢ वर्गों को नीचे नये क्रम से रखें।



बाक्सिंग (मुक्केबाजी)

अम्पायर १० सैकिण्ड तक दस गिनती
ानता है, इस बीच गिरे हुए खिलाड़ी को
न: खेलने के योग्य हो जाना चाहिए अन्यथा
ह हारा हुआ मान लिया जाता है।

इस खेल में जितना आवश्यक आक्रमण
रना है, उससे कहीं ज्यादा बचाव करना है
ाकि विरोधी को पाइन्ट न मिल सकें और
ह खिलाड़ी भी चोट ग्रस्त न हो सके।

अम्पायर के निर्देश का पालन करना
ॉक्सर का सबसे पहला कर्त्तव्य है।

आक्रमण बड़े सोचकर तथा फुर्ती से
पना बचाव करते हुए करना चाहिए तथा
सी जगह प्रहार करना चाहिए ताकि विरोधी
वंस हो जाए।

बॉक्सिंग का खेल समय पर समाप्त हो
था प्रत्येक राउन्ड तथा विश्राम भी समय
र समाप्त हो। इसके लिए एक टाइमकीपर
पस्थित होता है जो सीटी बजाकर समय
ा आरम्भ तथा समाप्ति की घोषणा करता
।

एक अंक गणक भी होता है…जो
ेलाड़ियों के अंक गिनकर विजयी खिलाड़ी
ी घोषणा करता है तथा अम्पायर विजयी
ेलाड़ी का हाथ ऊंचा उठाकर दर्शकों के
ामने उसे विजयी घोषित करता है।

यदि अंक बराबर हों तो दोनों खिला-
ियों के हाथ ऊंचे किये जाते हैं।

विशेष बात—इस खेल की विशेष बात
ह है कि मरहम पट्टी का तथा डाक्टर का
तजाम हमेशा रखना चाहिए।

कारण इस खेल में चोट लगने की
ावना बनी रहती है।

खिलाड़ी के लिए विशेष बात यह है कि
ह निरंतर अभ्यास कर अपने मुक्के का
हार कठोर, प्रभावशाली करे तथा व्यायाम
ारा अपने शरीर के विभिन्न भाग जहां
चोट लगने की संभावना ज्यादा रहती है उन्हें कठोर व मजबूत बनाकर आघात सहन करने योग्य बनाये।

अब हम आगे कुछ सावधानियों तथा फाउल का जिक्र कर रहे हैं जो प्रत्येक खिलाड़ी को ध्यान में रखने चाहियें।

फाउल तथा सावधानियां—बॉक्सिग में शरीर के कुछ अंगों पर प्रहार करना वर्जित है। हम उन्हें नीचे दर्शा रहे हैं। साथ ही खिलाड़ी को क्या-क्या सावधानियां बरतनी चाहियें, वह भी बता रहे हैं।

१. खिलाड़ी को अंगुलियों के पिछले भाग से ही प्रहार करना चाहिए। २. कमर के ऊपर प्रहार करना ही वैध माना जाता है। कमर के नीचे पेट पर प्रहार करना वर्जित है। ३. इसमें हाथ पूरा सीधा कर प्रहार करना वर्जित होता है। हाथ कोहनी से मुड़ा आवश्यक है। ४. अम्पायर की सीटी पर खेल रोक देना चाहिए। अम्पायर के हर निर्देश का पालन करना चाहिए। ५. क्रोध की भावना से या दुश्मनी की भावना से प्रहार करना खेल की पवित्र भावना से खिलवाड़ करना है। ६. खिलाड़ी को शरीर से धक्का देकर पीछे हटाना या जान-बूझकर धक्का देकर गिराना वर्जित है। ७. विरोधी का हाथ या कमर पकड़ना वर्जित है। ८. गिरे हुए खिलाड़ी पर चढ़कर बैठना या प्रहार करना नियम विरुद्ध है। ९. कोहनी से प्रहार करना वर्जित है। १० गर्दन पर प्रहार करना भी नियम के विरुद्ध होता है। ११. पेट के नीचे नर्म भाग पर या अंडकोषों पर प्रहार करना भी नितांत वर्जित है।

इन नियमों का पालन न करने वाले बॉक्सर को अम्पायर खेल से हटा सकता है।

अत: इस खेल को पवित्र भावना से ही खेलना चाहिए।



पृष्ठ २३ का शेष

बचो अप्रैल आया

मेहता जी के पास प्रातः ही चार बजे उनके परम हितैषी घनिष्ट मित्र वर्मा जी पहुच गये। ऊपर के 'पोर्शन' में रहते थे वर्मा जी और नीचे मेहता जो। मेहता जी को जगाया और उन्हें सूचना दी कि उनके साहब ने एकदम बुलाया है…कोई गड़बड़ी हो गई है। अब मेहता जी ठहरे बैंक में कैशियर, घबरा गये…हड़बड़ी में वर्मा जी के फोन वाली बात कन्फर्म भी न कर सके। यह भी नहीं सोचा कि कम से कम फोन पर बात पूछ लें। पत्नी उठी, अंगीठी जलाई, चाय बनाई और मेहता साहब को रवाना किया। पीछे दुर्घटना हो गई, वह बुरी तरह जल गई। मेहता जी बेचारे चार मील साइ-किल चलाकर गये और फिर चार मील वापिस उसे घसीट कर लाये। कमबख्त साइ-किल भी रास्ते में पैन्चर हो गयी थी। घर पहुंचते ही सूचना दी कि वर्मा जी ने अप्रैल फूल बनाया। फिर तो उन दोनों में जी भर कर लड़ाई हुई। आज तक बोल-चाल बन्द है, दोनों एक दूसरे का मुंह तक नहीं देखते। बताइये जनाब ! अब वर्मा साहब ने अप्रैल फूल बनाकर कौन नेकनामी का काम किया। अच्छा खासा दोस्त हाथ से अलग निकल गया।

मैं तो समझता हूं जो जैसा है उसे वैसा ही रहने दिया जाये तो बेहतर है। क्या रखा है अप्रैल फूल बनने बनाने में…

ही ही ही

● अध्यापिका बच्चों को 'ता-ते-ती' का प्रयोग समझा रही थी व्याकरण की कक्षा में। समझाने के बाद अध्यापिका ने पूछा, 'मैं प्यार करती हू, वह प्यार करता है, तुम प्यार करते हो ! बताओ यह क्या है ?'

एक बच्चा डरते-डरते उठा, 'मैडम यह प्यार का तिकोन है ! हम तीनों में से किसी एक की जान जायेगी।'

● खाने में मछली बनी थी। बहुत गन्दी लग रही थी। मालकिन ने नौकर से पूछा, 'अरे, तुमने मछली बनाने से पहले धोई नहीं थी ?'

नौकर ने उत्तर दिया, 'हैं हैं हैं हैं माल-किन क्यों मजाक करती हैं। मछली तो सारी उम्र पानी में रही थी उसे क्या धोना ?

सोचिये

10 रूपये जीतिए

एक संत और उनका चेला बस्ती में घूम रहे थे।उन्हें दूसरी ओर से आता एक व्यक्ति दिखाई दिया। व्यक्ति ने हाथ में बंधी घड़ी में देखा। संत ने उससे समय पूछा तो उसने दोबारा घड़ी देख समय बतला दिया।

कुछ दूर जाने पर चेले ने कौतूहलवश पूछा, "गुरुदेव, आपने उससे समय पूछा, उससे कुछ क्षण पहले ही उसने घड़ी देखी थी लेकिन आपको समय बताने के लिए उसे तुरन्त बाद दोबारा घड़ी देखनी पड़ी। ऐसा क्यों?"

संत बोले, "बेटा, जब उसने पहली बार घड़ी देखी तो उसने घड़ी से यह नहीं पूछा कि समय क्या हुआ है। उसने घड़ी से कुछ और सूचना मांगी थी व्यक्तिगत—जैसे कितना फालतू टाइम है मेरे पास ? या लंच में अभी कितनी देर है ? अथवा बस आने में कितने मिनट बाकी हैं ? या फलां दफ्तर के बन्द होने में कितना टायम बाकी है ? अथवा उसे जिसको मिलने आना था वह कितना लेट हो गया है ? आदि। घड़ी ने उत्तर दिया होगा, "पंद्रह मिनट या बीस मिनट अथवा जो कुछ था। यह समय के बारे में सूचना नहीं थी। जब मैंने उससे समय पूछा तो उसे दोबारा घड़ी से पूछना पड़ा कि समय क्या हुआ है ताकि वह मेरे प्रश्न का उत्तर दे सके।"

अन्तिम तिथिः १५ अप्रैल ८० सारांश

: दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

कविताएं

कवि—अन्तिम इच्छा

—चुन्नीलाल सलूजा

एक कवि
अदालती दरबार में
मौत की सजा पा गये,
जज
कवि की भोली सूरत पर
तरस खा गये।
पूछा,
'क्या है तुम्हारी अन्तिम इच्छा'
कवि बोले,
'इस वीरान आमार संसार में
कुछ भी नहीं लगता अच्छा
रहम कर
जब आपने यह है पूछा
तो जागृत हो गई है एक मंशा
अन्तिम समय में
आप मेरी कुछ कविताएं सुन लीजिए
उसके बाद भले ही मुझे सूली पर चढ़ा दीजिये'
कवि की यह इच्छा
जज ने करली मंजूर
सरकारी वकील ने आपत्ति उठाई
होकर मजबूर
बोले, 'हजूर...'
क्या है आपका यह दस्तूर
जुर्म कवि ने किया
कविता सुना कर सजा हमें
जब हम हैं बेकसूर
और कवि की अन्तिम इच्छा
हो न सकी पूर्ण...।

हेंगर

एक बार कुरता पहिने
कमरे के कोने में
खड़ा था कुछ भाव लिए
तभी अचानक पीछे से
मेरे दोनों कंधों पर
किसी ने कपड़े लटका दिए
कारण पूछने पर
तत्काल उत्तर मिला
माफ करना सर !
'मूड' केवल कपड़ों को
टांगने में अटका है—
मैंने समझा यह कुरता
हेंगर पर लटका है।

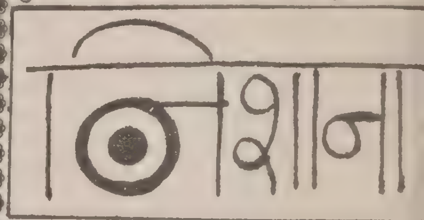
—नारायण श्रीवास्तव

हो हो हो

● एक नेता को एक रात भूत न
आया। नेताजी खड़े थे, उनके बाल भी
हो गये ! भूत ने अट्टाहास लगाकर कहा, '
किस लिए खड़े हो ?'

नेता घिघिया कर बोला, 'जी, मैं
सभा के लिये खड़ा हू और मेरे बाल आ
लिये खड़े हैं।'

● अमरीकी अभिनेता चार्ल्स
मजाकिया तबीयत के आदमी थे। सि
के भी रसिया थे। एक बार उनकी
शहर से बाहर जाने के लिए गयीं
उन्होंने अपनी एक सुन्दर युवती मित्र
फोन करके बुलाया। इतने में उनकी
कुछ लेने लौट आईं जो वह भूल गई

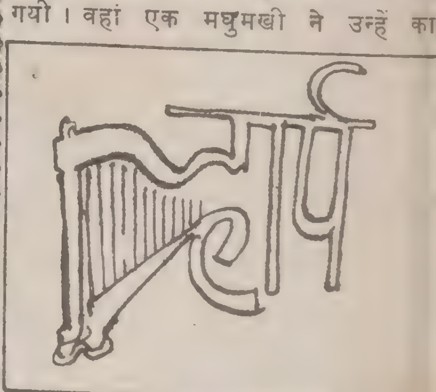


गेट पर चार्ल्स अपनी युवती मित्र को
पकड़ कर उतार रहे थे। चार्ल्स ने
घबराहट दिखाए अपनी बीबी से क
इनसे मिलो। यह हैं मिस......और अ
हैं मेरी श्रीमती...।"

दोनों ने औपचारिकता वश एक दू
का अभिवादन किया तो चार्ल्स बोले, '
जानता हूं कि आप दोनों एक दूसरे
बहुत कुछ कहना सुनना चाहती हैं अतः मु
आज्ञा दीजिए।"

इतना कह कर वह एक टैक्सी में बैठ
कर नौ दो ग्यारह हो गए।

● एक महिला शहद का फार्म देख
गयी। वहां एक मधुमखी ने उन्हें का



खाया। वह फार्म मालिक से बोली, "आप
की एक मधुमक्खी ने मुझे काट खाया है
कुछ कीजिए।"

फार्म मालिक बोला, "ठीक है। उस
मधुमक्खी को जरूर सजा मिलेगी जरा
बताइए तो इनमें से कौन सी मक्खी थी
वह ?"


आदिमानव
तुम कैसे कंजूस हो जी ? मुझे कभी अपनी गाड़ी में सैर कराने नहीं ले गये । अगर गैराज में छुपा कर ही रखना था तो लिया ही क्यों था ? आज मैं तुम्हारी ड्राइविंग किए बिना गाड़ी में नहीं मानूँगी । कोई बहाना नहीं चलेगा ।
निशा तुम समझने की कोशिश करो । यह मजाक की बात नहीं है । आजकल पेटरोल कितना खर्चीला हो गया है । चारों तरफ हाहाकार मचा है । इसमें कंजूसी की बात नहीं है ।
लेकिन चलो आज तो तुम्हें गाड़ी में बिठा कर सैर करवाना ही पड़ेगा । जिद्द लेकर बैठ गयी हो तो मानोगी थोड़े ही ।
मैं जानती थी कि तुम मुझे इन्कार नहीं करोगे । कौन से मॉडल की गाड़ी ली है तुमने ।
४१००० बी. सी. मॉडल है ।
बैठ गयीं तुम ? सीट पर अच्छी तरह जम कर बैठना, गाड़ी बर्वलिंग करती है । स्टेयरिंग वाला खूंटा कस कर पकड़े रहना । दोनों पैर ऊपर की तरफ मोड़ लो ।
चलो सब ठीक है । तुम गाड़ी तो स्टार्ट करो ।
होशियार ! में स्टार्टर घुमाने ही वाला हूं । बर्रर्रर्र···र्रर ।
अब तो तुम्हें पता लगा कि मैं गाड़ी निकालने से क्यों कतराता था । इसे चलाने के लिए पेट को रोल करना पड़ता है । पेट रोल करने में आदमी बहुत थक जाता है । पस्त हो जाता है । दोबारा ताकत प्राप्त करने के लिए सुअर का पूरा बच्चा आदमी खा जाता है । आबादी के बढ़ने के साथ जगल में सुअरों की तादाद बहुत कम हो गयी है । बड़ी मुश्किल से हाथ लगते हैं ।
इसके इलावा एक्सीडेंट का कितना खतरा है । यहाँ चारों तरफ पत्थर बिखरे पड़े हैं । चोट लगने की पूरी संभावना रहती है । सारा शरीर हिल जाता है ।

क्यों और कैसे

प्र० : संसार में सबसे पहले आग बुझाने की टुकड़ियों का संगठन कब और कहां हुआ ? **मुनीषकुमार—देहरादून**

उ० : आग मनुष्य की दोस्त और दास होने के साथ-साथ विनाश का भी बड़ा कारण बनी रही है। इसी कारण आदिकाल से ही मानव को आग बुझाने की समस्या का सामना करना पड़ रहा है, परन्तु आदि काल में मानवकोआग सेलड़ने में आज के समान कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता था क्योंकि उस काल के मानव गांवों, शहरों इत्यादि में इकट्ठे घर बनाकर नहीं रहते थे अपितु उनके घर दूर-दूर इक्का-दुक्का होते थे, तथा पानी के नजदीक ही होते थे।

जैसे ही मनुष्य ने इकट्ठे घर बना कर रहना आरम्भ किया उन्हें आग की समस्या की ओर ध्यान देना पड़ा और ईसा से कई सौ वर्ष पूर्व ही आग बुझाने वालों की टुकड़ियों का संगठन किया जाने लगा। ये टुकड़ियां संसार के हर क्षेत्र में पाई जाने लगीं। शहरों में विशेषकर इनका गठन किया जाने लगा था। प्राचीन रोमन लोग अपनी आग बुझाने की टुकड़ी अलग बनाते, इस कार्य के लिये वो दासों को लगाते थे। इन्हीं लोगों ने सबसे पहले आग पर लगातार पानी डालने वाली चीजों का निर्माण किया था। ये आग बुझाने में कुल्हाड़े, कम्बल, बालटियों, सीढ़ियों तथा बांसों का प्रयोग करते थे। मध्यकाल में जहां तहाँ कुछ आग बुझाने का कार्य होता था लेकिन ये सुगठित नहीं था।

जिस प्रकार की आग बुझाने की संस्था से हम परिचित है, सबसे पहले ऐसी संस्था इंग्लैंड में आरम्भ हुई थी। वास्तव में आग बुझाने की टुकड़ियों का गठन करने की शुरुआत इंग्लैंड की बीमा कम्पनियों ने की थी, क्योंकि ये आग लगजाने से होने वाली हानि के प्रति सदा ही सजग रहते थे। इस समय भी इंग्लैंड के सरकारी अफसरों ने आग की समस्या की ओर ध्यान नहीं दिया था और इसी कारण बीमा कम्पनियों ने नुकसान से बचने के लिए अपनी ही टुकड़ियां बना रखी थीं। सम्भवत: ऐसी सबसे पहली टुकड़ी सन् १७२२ में बनाई गई थी और बाद में अन्य लोगों ने इसका अनुकरण कर अपनी टुकड़ियां बनायीं। ये बीमा कम्पनियां, अपने द्वारा बीमा की हुई इमारतों पर आग का निशान लगा देते थे तथा अन्य इमारतों की अधिक चिन्ता नहीं करते थे। सन् १८३३ में लन्दन शहर के लिए सरकार द्वारा सबसे पहली आग बुझाने की संस्था गठित की गई थी।

अमरीका तथा संसार के अन्य देशों में भी वहां की सरकार से पहले स्वयं नागरि द्वारा ऐसी संस्थायें स्थापित की गई थीं। इन संस्थाओं में आग बुझाने का कार्य स्वयं सेवक ही करते थे। वास्तव में आज भी इन देशों में आग बुझाने का कार्य अधिकतर स्वयं सेवक ही करते हैं। अमरीका में लगभग दस लाख आग बुझाने वाले हैं, इनमें केवल एक लाख ही ऐसे हैं जिन्हें बाकायदा पूरी तनख्वाह दी जाती है बाकी सब ही नागरिक स्वयं सेवक हैं।



प्र० : बच्चे बोलना कैसे सीखते हैं ?

उ० : सभी जानते हैं कि बच्चे के बोलना आरम्भ करने पर सबसे पहला शब्द उसके मुँह से माँ ही निकलता है। देखने से तो ये एक अत्यन्त सरल कार्य दिखाई देता है, परन्तु वास्तव में ये एक अत्यन्त कठिन और पेचीदा कार्य है। बोलने की अवस्था तक पहुँचने में न केवल विकास के कई चरण पार करने पड़ते हैं, अपितु एक बहुत अनोखे कार्य को पूरा करना होता है जिसे मनुष्य के अतिरिक्त संसार में पाये जाने वाला कोई भी और जीव करने में समर्थ नहीं है।

आइये विकास के इस क्रम को आरम्भ से देखें। बच्चा जब पैदा होता है तो उसका मस्तिष्क एक खाली स्लेट या कोरे कागज के समान होता है जिस पर किसी प्रकार की कोई छाप नहीं होती। बच्चे के शरीर से संदेश लेने वाले भागों ने कोई भी सं नहीं लिये होते। बच्चे के नेत्र खुले होने परन्तु आंखों तथा दिमाग के बीच की न का विकास अभी नहीं हुआ होता। इ कारण बच्चे के सब कुछ देखते रहने पर उस मस्तिष्क पर किसी भी बात का प्रभाव न पड़ता।

एक या दो महीने के भीतर इन नस का विकास हो जाता है तथा शिशु अपन मां को देखने लग जाता है। एक आकृ को बार-बार देखने पर दिमाग का 'आका स्मृति केन्द्र' विकसित हो जाता है तथा शि के मस्तिष्क के इस केन्द्र में मां की आकृ की छाप, स्मृति के रूप में संचित हो जात है; और अब शिशु मां को पहचानने ल जाता है।

जैसे ही मां को आभास होता है वि बच्चा उसे पहचानने लगा है, वो अपन ओर संकेत कर बार-बार मां शब्द बोलत है। पहले बच्चा सुनता नहीं हैं परन्तु धीरे-ध और नसों के विकास होने पर, वह मां शब्द को सुनने लग जाता है। बार-बार इस मां श को दोहराने से बच्चे के मस्तिष्क में मां शब्द की 'ध्वनि स्मृति' संचित हो जाती है। अब बच्चा मां शब्द की याद भी रखता है तथ समझता भी है।

अब माँ बच्चे को बोलना सिखाने क प्रयास करती है मां शब्द को बार बा दोहरा कर वह इस कार्य को करना आरम्भ करती है। बार-बार मां शब्द सुनने से बच्चे के दिमाग के 'आकार स्मृति केन्द्र' तथा 'ध्वनि स्मृति' केन्द्र में एक तालमेल उत्पन्न होता है। इसे संयोजक कहते हैं। अब शिशु मां को देख कर न केवल उसे पहचानता है बल्कि उसके साथ-साथ मां शब्द की ध्वनि का भी स्मरण करता है। और इस प्रकार शिशु मां को पूर्णरूप से पहचानने लगता है। इसके बाद बच्चा मां की नकल करना आरम्भ कर देता है। पहले वह बोले बिना ही शब्द बनाता है। बहुत बार शब्द को कहने का प्रयास करने के उपरान्त ही शिशु मां को देखकर 'मां' कहने के लिए ध्वनि तन्तुओं को सही तौर से हिला पाता है। और इस अनथक प्रयास के फल स्वरूप ही बच्चा मां-मां शब्द का उच्चारण करता है और इस शब्द को सुन हर्ष विभोर मां कहती है कि मेरा बच्चा बोलने लग गया है।

क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

अंक नं० २ में प्रकाशित

स्टीजन स्पोर्टस प्रतियोगिता का सही हल

विजेता—ओमप्रकाश माहेश्वरी—अजमेर।

दीवाना कमल रंग भरो प्रतियोगिता नं १२ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—अनिल प्रहलाद पाटिल, सी. एम. डब्ल्यू. आफिस जाबक, क्वाटर न० ३९२ ए, डा० बढेरा, जिला अमरावती।

द्वितीय पुरस्कार—राजिन्दर चोपड़ा, ८३-ए, गुरुनानक नगरी, पटेल चौक, जालन्धर सिटी (पंजाब)।

तृतीय पुरस्कार—सुनीता देवी मंडोथ सुपुत्री श्री महिन्दर पॉल मंडोथ, ४६९ मोहल्ला दलिपाहाई, भोलानाथ नगर शाहदरा, दिल्ली-३२

कैमल आश्वासन पुरस्कार

१. ज्योत्स्ना उनियाल-देहरादून, २. शिबानी विश्वास—देहरादून, ३. सिन्दू—जम्मू, ४. शिवानी विजय कुमार—उल्हास नगर, ५. विष्णु सी. दलवानी—अहमदाबाद।

दीवाना आश्वासन पुरस्कार

१. अनिल कुमार नन्दा-पटियाला, २. जसबीर कौर पी. एस.—बम्बई, ३. नुसरत सैफी—रायपुर, ४. कल्पना प्रधान—पूर्वी सिक्किम, ५. तरखत सिंह राजपुरोहित-कलियां (महाराष्ट्र)।

कैमल सर्टीफिकेट

१. डी. रंघु प्रसाद—रुड़केला, २. डिम्पी—चण्डीगढ़, ३. गोपालकृष्ण पॉल—नई दिल्ली, ४. रामनारायण सारसर-जयपुर, ५. विशाल उठामनी—रायपुर, ६. भुपिन्दर कुमार रमेश चन्दर—अमझोरा (धार), ७. कुमारी प्रकाश रायसिंघानी—उल्हासनगर, ८. सतीश कुमार दिल्ली, ९. प्रशांत कुमार झा—देवगढ़, १०. मनोज कुमार मल्होत्रा—दिल्ली।

भूल सुधार

दीवाना के अंक २ (१ फरवरी १९८०) में १९ पृष्ठ पर 'पाक क्रिकेटरों' के व्यंग्य चित्र वाली फीचर के उत्तर में एक गलती हो गयी थी। १० नम्बर के खिलाड़ी माजिदखां थे उत्तर में गलती से अब्दुल क़ादिर का नाम छपा था।

दीवाना

बेरोजगारी गाइड



आजकल चारों ओर विभिन्न काम धंधे सिखाने वाले और नौकरियां पाने की विधियां सिखाने वाले गाइडों की भरमार है। किसी ने यह नहीं सोचा कि बेरोजगारी में कितने मजे हैं। पता नहीं क्यों लोग रोजगार लगवा कर लोगों की जिन्दगी बरबाद करने पर तुले हैं। बेरोजगारी एक बेताज की बादशाह है। बेरोजगारी में मजे वैसे ही बिखरे पड़े हैं जैसे जामुन के मौसम में जामुन के पेड़ों के नीचे जामुन बिखरे होते हैं। आप हमारा यह फीचर पढ़िये और देखिये। आप कहेंगे कि रोजगार किसी दुश्मन को मिले, हमें बेरोजगारी से प्यार है।

नो वेकेन्सी का बोर्ड हमारा झंडा है।

दीवाना ने अथक परिश्रम से बेरोजगारी गाइड छपवाया है। इसमें ऐसे तरीके बताये गये हैं कि आदमी इनकी सहायता से उम्र भर बेरोजगार बना रह सकता है। हाथ आती नौकरी भी कोसों दूर चली जायेगी। बेरोजगारी के हर पहलू पर सौ केन्डल पावर की रोशनी डाली गयी है। अब आप इसे पढ़कर अपना जीवन सफल बनाइये और खानदान का नाम ऊंचा करें।

काले चश्मे

आप बेरोजगार होंगे तो यार दोस्तों के मिलने पर उन से नजरें मिलाना जरा मुश्किल हो सकता है। इसका उपाय यह है कि आप काले चश्मे पहनने की आदत डालें।



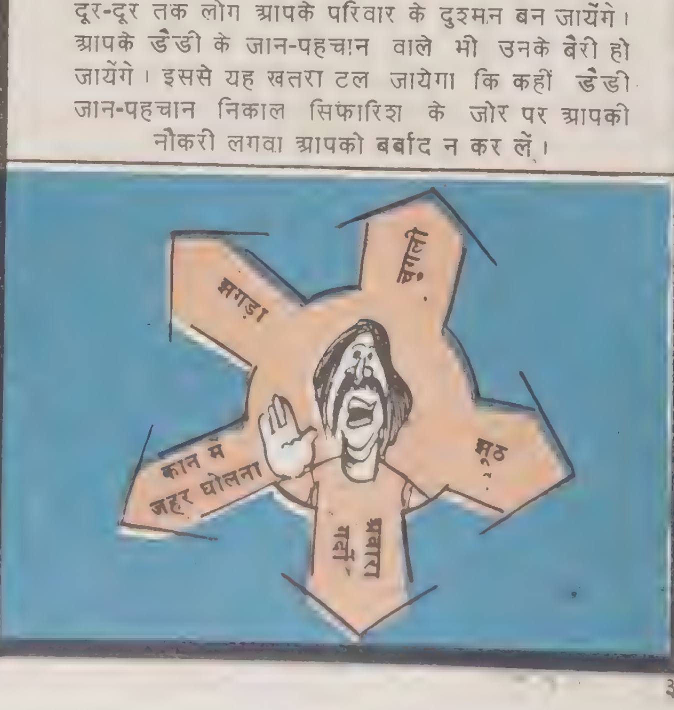
राजदूत के कर्तव्य

लाइब्रेरी जाकर डिप्लोमेसी पर जितनी पुस्तकें मिलती हैं उन्हें पढ़ डालिये। बेरोजगार होने के नाते आप घर के राजदूत का महान् कार्य करेंगे (बेरोजगारों को कई हॉनरेरी महान कार्य करने का सुअवसर मिलता है) भाभियों को उनके मैके पहुंचाना, लाना, मुंडन, ब्याह-शादी आदि पर घर के दूत की हैसियत से जाना वगैरह। इन सब जगह डिप्लोमेसी का काम है। आपकी आवभगत वैसे ही होगी जैसे विदेशी राजदूत की होती है।



मूल मंत्र

इन पांच मूल मंत्रों को मोटो बना लीजिये। इनके कारण दूर-दूर तक लोग आपके परिवार के दुश्मन बन जायेंगे। आपके डैडी के जान-पहचान वाले भी उनके बैरी हो जायेंगे। इससे यह खतरा टल जायेगा कि कहीं डैडी जान-पहचान निकाल सिफारिश के जोर पर आपकी नौकरी लगवा आपको बर्बाद न कर लें।



धीरे से जाना बगियन में

बेरोजगारी के कारण आपको कोई रिश्ता नहीं देगा। आप जिन्दगी भर आजाद रहेंगे। किसी खूंटे से नहीं बंधेंगे। यह बेरोजगारी का सबसे हसीन इनाम है। किसी एक से कभी दिल न लगाना बोरियत जो होगी सो तो होगी ही गले मुसीबत लगने का भी डर होगा। इसलिए हे बेकार मनुष्य स्वयं को तू भौंरा समझ।



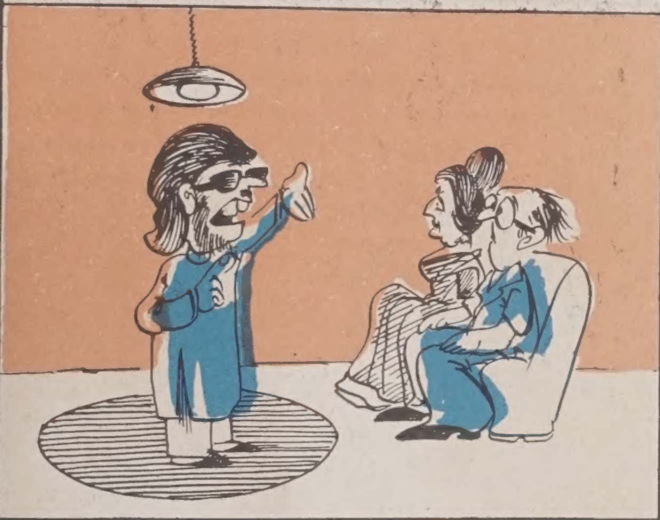
फिल्मी डायलॉग

जब आपको बेकारी की कृपा से थोक भाव पर प्रेम लड़ाना पड़ेगा तो आसानी के लिए फिल्मी डायलॉग रट्टा मारकर रखिए। समय-समय पर काम आते रहेंगे।



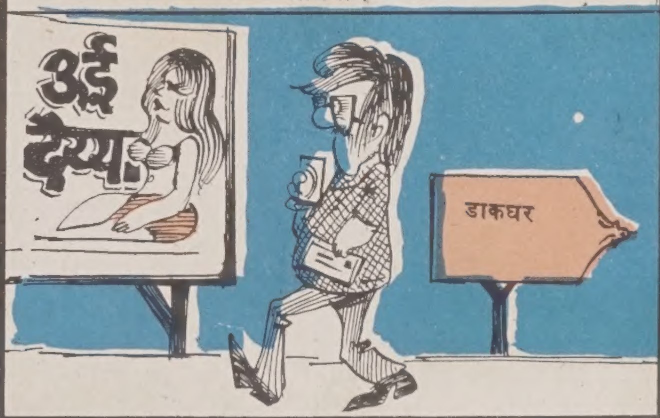
मां-बाप का सामना

माता-पिता बेरोजगारी पर आपको दोषी ठहरायें तो उन्हें कड़वा सा लेक्चर पिलायें। आर्थिक व्यवस्था को दोष दें। उन्हें बता दें कि बगैर सिफारिश के कहीं नौकरी मिलती है और इसका कसूरवार भी उनको ही ठहरायें। कहिये कि मुझे तो ऐसे मां-बाप मिले जिनकी कहीं जान-पहचान नहीं है। गोबर गणेश मिले। आपकी उम्र भर की गलतियों की सजा मुझे भुगतनी पड़ रही है। दोनों अपराध भाव से दब जायेंगे और घिघयाने लगेंगे। उस दिन खाना भी बढ़िया मिलेगा।



जा.जा. रे..जा. बैरी बदरवा

एप्लीकेशन के साथ पोस्टल आर्डर के पैसे भेजने हों तो पोस्ट आफिस हमेशा दो बजे के बाद पहुंचे। पोस्टल आर्डर दो बजे तक ही मिलते हैं। आपको एप्लाई न करने का बहाना मिलेगा कि मैं क्या करता पोस्टल आर्डर ही नहीं मिला। अब पोस्टल आर्डर के पैसों से हिन्दी पिक्चर देखने जायें. हिन्दी पिक्चरें बेकार होती हैं। एक बेकार दूसरे बेकार के काम नहीं आयेगा तो और कौन आयेगा ?



अखबार का चमत्कार

सुबह-सुबह अखबार पर कब्जा करके वान्टेड कॉलम की नौकरियों वाले कॉलम में तीन-चार जगह पैन से निशान लगायें। इनसे बड़ा फायदा होगा। घर वाले समझेंगे आप जीजान से नौकरी की तलाश में लगे हैं। सबकी सहानुभूति आपके साथ हो जाएगी। अखबार पढ़ने के लिए सबसे पहले आपको मिलेगा। उसमें आप इत्मीनान से आज के सिनेमा तथा कॉमिक्स वगैरह पढ़ कर लुत्फ उठा सकते हैं। घर से जाने के लिये उठोगे तो मां बादाम का हलुवा खिलायेगी कि बेटा नौकरी की तलाश में निकला है। डैडी आपको एप्लीकेशन भेजने के लिए चार-पांच रुपये थमा देंगे।



इन्टरव्यूह

इन सारी कोशिशों के बावजूद अगर कहीं से इन्टरव्यू कॉल आ भी जाये तो चिन्ता मत कीजिये। आप कई ऐसे हथकंडे कर सकते हैं कि इन्टरव्यू कर्ताओं को मजबूर होकर आपको रिजेक्ट करना पड़े।

(क) गन्दे कपड़े पहन कर जायें या कमीज उल्टी पहन लें।

(ख) किसी का अभिवादन न करें। इन्टरव्यू देने जाते समय मुँह में पान और हाथ में जली सिगरेट जरूर रखें।

(ग) इन्टरव्यू कर्ताओं के सवालों का जवाब केवल एक ही दें मैं बेवकूफों के सवालों के जवाब नहीं देता।



पान-सिगरेट की दावत

अब आप डाक खर्च के पैसे लेकर अपने पनवाड़ी के पास जायें। इलाइची वाला पान लगवा कर महंगी सिगरेट के कश मारिये और विविध भारती के प्रसारणों के सात सुर में सुर मिला कर अपने बेरोजगार जीवन के रंगों का इन्द्र धनुष निहारिये।



फार्मूला दास मलूका

आप बेरोजगार होंगे तो घर वालों के लिए दिल में प्रायः यह बात चुभेगी कि आप क़ाम-धाम कुछ नहीं करते दूसरों की कमाई पर हाथ साफ करते हैं। आप समय-समय पर घर वालों को यह चेताते रहिये 'पंछी करे ना चाकरी अजगर करे न काम, दास मलूका कह गये सबके दाता राम' उन्हें अक्ल आयेगी कि आप दाता राम का दिया खा रहे हैं, किसी का एहसान नहीं है।



जूते बचाओ

बेरोजगारी में एक ही चक्कर है कि दौड़-धूप या आवारागर्दी में जूते बहुत घिसते हैं। नये जूतों के लिए घर वालों के सामने गिड़गिड़ाना पड़ता है। इसका एक ही इलाज है, जूते पहनना छोड़ दीजिये। पैदल चलने पर पैर के तलवे नहीं घिसते उलटे मोटे और पक्के होते जाते हैं। जिस्म का कोई भाग पक्का हो जाये इससे अधिक और क्या चाहिये।



हाथ की सफाई

हाथ की सफाई सीख लीजिये। अपनी जेब खर्च के लिए डैडी या मैया की जेब से थोड़े-थोड़े पैसे तो साफ करने ही पड़ेंगे। सिगरेट वगैरह भी उड़ानी पड़ेगी। अब रोज-रोज हाथ फैला कर अपनी आन पर बट्टा थोड़े ही लगने दिया जा सकता है।



अन्दर वाला बाहर

अपनी कॉलोनी के उस दर्जी से दोस्ती गांठे रखिये जो पुराने कपड़ों को उलट कर नया बनाते हैं। ये सज्जन बहुत काम आयेंगे। आपको कपड़े तो प्रायः घर के दूसरे सदस्यों द्वारा रिजेक्ट किये हुए ही पहनने पड़ेंगे। वे ही नये बन जायेंगे। सफल बेरोजगार के पास ढंग के कपड़े तो होने ही चाहियें क्योंकि दिन भर लोकिंग करनी होती है।



उपसंहार

आपको अब तक की सारी बातें समझ आ गई हैं तो समझिये आप जीवन बेरोजगारी की शीतल चांदनी में निहाल होने वाले हैं। आप आजाद हैं। दिन भर कमेंट्री सुनिये, वर्ग पहेलियां भरिये, उपन्यास पढ़िये, विविध भारती को फर्माइश भेजिये, जयसंतोषी मां वाले कार्ड लिखिये, पिक्चर हॉल में सो जाइये, प्रेमिकाओं के साथ प्रेम गार्डन में मूंगफलियां खाइये, गरज यह कि जिन्दगी की सारी हरकतें पूरी कर लीजिए हमारा आशीर्वाद हमेशा आपके साथ रहेगा।





...मार जैन, मुरली ...र्स, गोल बजार, ... १७ वर्ष, कमेन्ट्री ...ना गाना, खेलना ।

राम निवास सिह, एम० सी० केशव न० ४६८, साउथ कालोनी, भक्ति नगर, जलपाई गुडी, (प० ब०), १६ वर्ष, पत्र मित्रता, दीवाना पढ़ना ।

चन्द्र शेखर, १५७२, खेता राम स्ट्रीट, मुक्तसर, जिला फरीद कोट (प०) २४ वर्ष, नावल पढना, व गीत गुनगुनाना, दीवाना पढना ।

रतनलाल नानवानी, संगम रेडियो हाउस, शरद चौक, रायपुर (म० प्र०) १६ वर्ष, पत्र मित्रता करना, दोस्ती बढाना ।

मनोज वार्ष्णेय के० सी, १५३, पुराना कवि नगर, गाजियाबाद ८ वर्ष, तैरना, बैडमिंटन खेलना, दीवाना तथा अन्य पुस्तकें पढना ।

[illegible] वार्ष्णेय, ए० सी० ६, पुराना कवि नगर, गाजियाबाद, १० वर्ष, क्रिकेट खेलना, तैराकी, उपन्यास पढना, कहानी लिखना ।

ए० के० गुरबक्षाणी, मु० पो० [illegible] ग्राम, रायपुर (म०प्र०), १५ वर्ष, प्यार करना, फोटो जमा करना, दोस्ती बढाना, स्वास्थ्य पर ध्यान देना ।



...ह, ३४ ब्रुकवांड ...ाणिक बाग रोड, ... वर्ष, क्रिकेट खेलना, ... करना, माता-सेवा करना ।

अजय वधेरवाल, २६ शक्कर बाजार, इन्दौर (म० प्र०), १५ वर्ष, फुटबाल खेलना, संगीत सुनना, फिल्म देखना, दीवाना पढ़ना ।

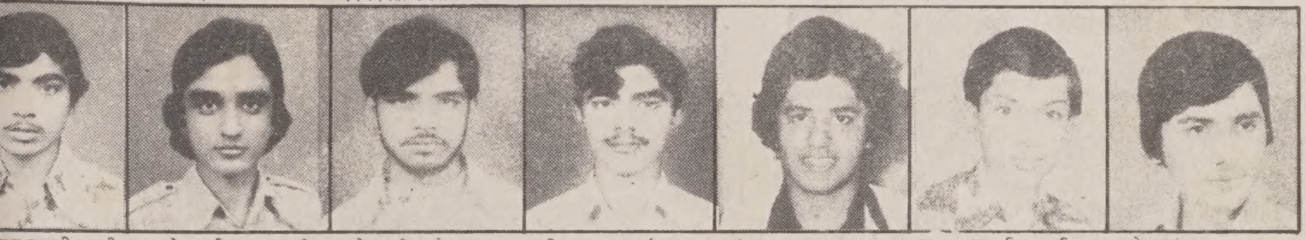
भूपाल सिह रौतेला, श्रीकोट (अल्मोड़ा) २१ वर्ष, फास्ट ड्राईविंग करना, पत्र व्यवहार, क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता करना ।

राजनारायण माथुर, द्वारा बी० एन० माथुर, भेरु-घाट, पाली १८ वर्ष, बास्केट बाल खेलना, दीवाना पढ़ना, टेलीफोन करना ।

आलोक सिंघल, ७ मु० चाऊ फिरोजाबाद आगरा-२८३२०३ १७ वर्ष, टिकट संग्रह, टी टी. खेलना, उपन्यास पढ़ना, फिल्म देखना ।

प्रकाश सीताराम, चावह रोडो पशुवली, ईब्रुर १६ वर्ष, पढाई करना, फिल्मे देखना, दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता, दोस्ती करना ।

रणजीत अरोडा, म० न० ५, फिरदौस नगर, जमालपुरा, भोपाल-१, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता दीवाना पढना, क्रिकेट खेलना ।



...न्द्र तारानी, भवानी ...स कटनी, डी-४५ ... १६ वर्ष, पुस्तक ...र फिल्म देखना, ...ना ।

मनमोहन, टी२६ एच बलजीत नगर, नई दिल्ली-५, २० वर्ष, फिल्म देखना, लड़को मे मित्रता करना, बच्चो से प्यार करना ।

ड्राफेज आई यू पटेल, वसाया भक्त बिल्डिंग सवलोक-रूम न० २२, बम्बई-७, २२ वर्ष, लड़कों से फैमली दोस्ती करना, फिल्म देखना ।

ललित भूषण शर्मा, ३६७, कृष्णा नगर, हिसार, (हरियाणा)-१२५००१ १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, रोजाना पढना, फिल्म देखना ।

मुकेश कुमार, ब०४३/५ नारायणा, फैक्ट्री एरिया, फेस-I नई दिल्ली-२८, १७ वर्ष, स्टैम्पस इकट्ठी करना, पत्र-मित्रता, करना ।

चन्द्र प्रकाश मित्तल, मित्तल हस्पताल, रेलवे रोड, जगराओ. (पंजाब) १४ वर्ष, पत्र मित्रता, डाक टिकट संग्रह करना, पत्र लिखना ।

महेश मलग, नारायण दास, भाडमल, बस स्टैण्ड, बलांगीर (उडीसा), १६ वर्ष, पत्रमित्रता व दीवाना पढ़ना, खेलो म भाग लेना ।



...मार विरा, ६/क-...ला बाणा नगर, ... वर्ष, फिल्म देखना ...पढ़ना, पत्र-मित्रता ...वाना पढ़ना ।

जुगल किशोर सिंघल सी-३, १६१ जनक पुरी, पंखा रोड, नई दिल्ली-५८, १७ वर्ष, रेडियो सुधारना व विभिन्न देशों से पत्र व्यवहार करना ।

श्याम जी श्रीवास्तव ११४, रकाब गंज, टेढी बजार लखनऊ-२२६००३, १३ वर्ष, मंच देखना, क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना ।

विजय कुमार लालवानी, हरेश स्टोर्स बजारी रोड, रायपुर, १७ वर्ष, दीवाना पढना, पत्र मित्रता, टिकट जमा करना, [illegible] से प्यार करना ।

अशोक कुमार शर्मा, पुत्र श्री सांवर मल शर्मा, रघुनाथ विद्यालय, रतनगढ, १८ वर्ष, रेडियो सुनना, सिनेमा देखना, क्रिकेट खेलना ।

अजय कुमार गुप्ता, ग्राम भगूपुरा डा० खास त० बिलारी (मुरादाबाद), १७ वर्ष, पत्र मित्रता करना, पढ़ना, साईकिल पर घूमना ।

हृदेव सिह भदौरिया द्वारा बृजराज सिह, ग्रा० भोली, डा० भरथना, इटावा उ० प्र० १६ वर्ष, पत्र मित्रता करना फिल्म देखना ।



...भट्टाचार्य जी, जे० ... लि० ...सगवा-१४८ ...न्सान की मजबूरी ...डियो सुनना ।

एस० अकेला, ऐना इस्लामपुर, धनसार-धनबाद, १८ वर्ष, पत्र मित्रता, बच्चों से प्यार [illegible] दूसरो के काम में मदद करना ।

सलीम रट्टूमाल, १४ जोन्स स्ट्रीट मद्रास, १५ वर्ष, नयी फिल्में देखना, दूसरों की सहायता करना, दीवाना पढना, क्रिकेट खेलना ।

हेमराज लखवानी द्वारा पोस्ट मास्टर, उदयपुर, २१ वर्ष, राष्ट्र के प्रति उच्च चारित्रीक स्तर रखने वाले व्यक्तिदो म मित्रता करना ।

[illegible] लखवानी, सिन्धी कालोनी, भवंना, १५ वर्ष, नीतू व ऋषि कपूर की अधिक फिल्म देखना, दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता करना ।

आदर्श गुहा, (एम० ए०) गुमटी न० ५०, कानपुर, १६ वर्ष, क्रिकेट एव टेनिस खेलना, पत्रिकायें पढ़ना पत्र मित्रता करना ।

[illegible] फिल्मस [illegible] (बिहार) १५ वर्ष, अभिनय करना, खुश रहना, [illegible] से फोन पर हाल चाल पूछना ।



...वास्तव, बांके शाह ...बरा), मुजफ्फर पुर ... १८ वर्ष, कसरत ...ड़े पहनना, दीवाना

सुधीर श्रीवास्तव, बांकेशाह चौक (चन्दवारा) मुजफ्फर पुर (बिहार) १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, कमट्री सुनना, प्यार करना ।

कन्हैया लाल [illegible], मकान न० [illegible] अमला टोला, कटिहार, २० वर्ष, लड़कियों से पत्र मित्रता, शायरी लिखना, फिल्म देखना ।

अरविन्द शर्मा, कटरा खां पुर्दल, शिव कुटीर, इटावा, १६ वर्ष, प्रकृति प्रेम, सच्चे दोस्त की तलाश, दीवाना पढ़ना ।

सुनिल सोनी, [illegible] श्री गंगा नगर (राज०) माधो पार्क के पास सोनीविला, ६ वर्ष लड़कियों को देखकर गाने गाना, दीवाना पढ़ना ।

[दी]वाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी म साफ-साफ लिखें।

नाम ____________________

पता ____________________

आयु ______ शौक ______

...नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित । प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता ।

Regd. No. D (D) - 275

